بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

In the Name of Allah, the Most Compassionate, the Most Merciful

ISLAM AND MUSLIM LIFE IN AD-DUNYA

A Comprehensive Guide Based on the Noble Qur'an and Authentic Sunnah

AUTHOR

Mohd Abdul Rafique Khan

DEDICATED TO

Late Mrs. Shamim Fatima

(May Allah forgive her, have mercy upon her, illuminate and expand her grave, and accept this humble work as Sadaqah Jariyah and Isal-e-Sawab for her. May He grant her Jannat-ul-Firdaws. Ameen.)

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا

And your Lord has decreed that you worship none but Him, and that you be kind to parents.

और आपके रब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार (एहसान) करो।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا. مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ.

All praise is due to Allah, the Lord of all the worlds. We praise Him, seek His help, seek His forgiveness, and seek refuge in Him from the evil within ourselves and from the consequences of our wrong deeds. Whomever Allah guides, none can misguide; and whomever He allows to stray, none can guide.

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और क्षमा माँगते हैं, तथा अपने नफ़्स की बुराइयों और अपने कर्मों की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। जिसे अल्लाह मार्गदर्शन दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता; और जिसे वह भटकने दे, उसे कोई मार्गदर्शन नहीं दे सकता।

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ

O Allah, send Your prayers, peace, and abundant blessings upon our Prophet Muhammad ﷺ, upon his family, and upon all of his Companions.

ऐ अल्लाह! हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर, उनके परिवार पर और उनके सभी सहाबा पर अपनी रहमत, सलामती और भरपूर बरकतें नाज़िल फ़रमा।

وَقُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا

"My Lord, increase me in knowledge." — Qur'an 20:114

"ऐ मेरे पालनहार! मेरे ज्ञान में वृद्धि कर।" — कुरआन 20:114

رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ

My Lord, I seek refuge in You from the incitements of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they be present with me.

"ऐ मेरे रब! मैं शैतानों के उकसावे (वसवसों) से तेरी पनाह मांगता हूँ, और ऐ मेरे रब! मैं इस बात से भी तेरी पनाह मांगता हूँ कि वे मेरे पास आएं।"

DEDICATION & ACKNOWLEDGEMENTS

Dedication

This humble work is lovingly dedicated to the memory of my beloved mother, Late Mrs. Shamim Fatima. She taught me kindness before I understood knowledge, patience before I understood hardship, and compassion before I understood the world. I pray that Allah (Subhanahu wa Ta'ala) forgives all her shortcomings, fills her grave with light, grants her His infinite mercy, and raises her rank among the righteous.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهَا وَارْحَمْهَا وَاجْعَلْ قَبْرَهَا رَوْضَةً مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، وَارْزُقْهَا الْفِرْدَوْسَ الْأَعْلَى. آمِين.

O Allah, forgive her and have mercy upon her, make her grave a garden from among the gardens of Paradise, and grant her Al-Firdous Al-A'la (the highest level of Paradise).

ऐ अल्लाह! इसे माफ़ कर दे (इसके गुनाहों को बख़्श दे), इस पर रहम फ़रमा, इसकी क़ब्र को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ बना दे, और इसे जन्नतुल फ़िरदौस (जन्नत का सबसे ऊँचा मक़ाम) अता फ़रमा।

Special Acknowledgement

Heartfelt gratitude is expressed to Mr. Ahmed Ginani (Talib-e-Ilm, Arshad Meridian, Juhapura, Ahmedabad) for his encouragement, sincere advice, valuable suggestions, and continuous support throughout the preparation of this work. May Allah bless him with beneficial knowledge, sincerity, good health, barakah in his life, and success in both this world and the Hereafter. Ameen.

इस कार्य की तैयारी के दौरान श्री अहमद गिनानी (तालिब-ए-इल्म, अरशद मेरिडियन, जुहापुरा, अहमदाबाद) के प्रोत्साहन, निष्कपट सलाह, मूल्यवान सुझावों और निरंतर सहयोग के लिए उनके प्रति दिल से आभार व्यक्त किया जाता है। अल्लाह उन्हें फ़ायदेमंद इल्म (ज्ञान), इख़लास (निष्ठा), अच्छा स्वास्थ्य, उनके जीवन में बरकत और इस दुनिया व आख़िरत (परलोक) दोनों में कामयाबी अता फ़रमाए। आमीन।

I also express my appreciation to my Ustad Qari Ahmed Ali Sahab, Mufti Ishaq Sahab, Dr. Mujtaba Khan, and my dear friend Iftekhar Khan for their efforts in bringing the Qur'an and Ahadeeth into my life and for explaining the Qur'an and authentic Sunnah to me. May Allah reward them all abundantly.

मैं अपने उस्ताद क़ारी अहमद अली साहब, मुफ़्ती इसहाक़ साहब, डॉ. मुज्तबा ख़ान और अपने अज़ीज़ दोस्त इफ़्तेख़ार ख़ान का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरे जीवन में क़ुरआन और अहादीस (हदीसों) को लाने और मुझे क़ुरआन व सहीह सुन्नत समझाने में प्रयास किए।

May Allah bless him with beneficial knowledge, sincerity, good health, barakah in his life, and success in both this world and the Hereafter.

अल्लाह उन्हें इल्म, इख़लास, अच्छा स्वास्थ्य, इस जीवन में बरकत और इस दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाबी अता फ़रमाए।

TABLE OF CONTENTS

Chapter 1 Understanding Ad-Dunya – अद-दुनिया (इस संसार) को समझना

Chapter 2 The Purpose of Life – जीवन का उद्देश्य

Chapter 3 Tawheed – The Foundation of Islam – तौहीद – इस्लाम की बुनियाद

Chapter 4 The Six Pillars of Iman – ईमान के छह स्तंभ (अर्कान)

Chapter 5 The Five Pillars of Islam – इस्लाम के पांच स्तंभ (अर्कान)

Chapter 6 Salah – The Daily Connection with Allah – नमाज़ – अल्लाह से रोज़ाना का जुड़ाव

Chapter 7 Rizq, Halal Earnings & Tawakkul – रिज़्क़, हलाल कमाई और तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा)

Chapter 8 Family Life in Islam – इस्लाम में पारिवारिक जीवन

Chapter 9 Good Character (Akhlaq) – अच्छा चरित्र (अख़्लाक़)

Chapter 10 Tawbah & Seeking Allah's Forgiveness –तौबा और अल्लाह से माफ़ी मांगना

Chapter 11 Death, Barzakh & The Hereafter – मृत्यु, बरज़ख़ और आख़िरत

Chapter 12 Living a Purposeful Muslim Life – एक उद्देश्यपूर्ण मुस्लिम जीवन जीना

Appendix Daily Du'as & Glossary – दैनिक दुआएँ

Conclusion Final Reflection & Closing Du'a –अंतिम विचार और समापन दुआ

CHAPTER 1

Understanding Ad-Dunya

فهم الدنيا

दुनिया की ज़िंदगी को समझना

Opening Verse

اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ

Know that the life of this world is only play, amusement, adornment, mutual boasting among yourselves, and competition in wealth and children

जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी केवल खेल, तमाशा, सजावट, आपसी घमंड और धन तथा संतान की अधिकता की प्रतिस्पर्धा है।

Surah Al-Hadid (57:20)

Introduction & Meaning

The Arabic word Ad-Dunya (□□□□□□) literally means "the nearer life" or "the present worldly life." It comes from the root D-N-W, meaning "near" or "close." It refers to the temporary world in which every human being lives before entering the eternal life of the Hereafter (Al-Akhirah).

Allah Created This World with Purpose / अल्लाह ने इस दुनिया को एक उद्देश्य के साथ बनाया है

Allah did not create the universe without wisdom.

अल्लाह ने इस ब्रह्मांड को बिना किसी हिकमत के नहीं बनाया है।

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

Reference: Qur'an 67:2

He created death and life to test you as to which of you is best in deeds.

उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से कौन सबसे अच्छे कर्म करता है।

This verse teaches that life is an examination. Allah is not asking who performs the most deeds, but who performs the best deeds—those done sincerely for Him and according to the guidance of Prophet Muhammad ﷺ.

यह आयत हमें सिखाती है कि यह जीवन एक परीक्षा है। अल्लाह यह नहीं पूछ रहा है कि कौन सबसे ज़्यादा कर्म करता है, बल्कि यह पूछ रहा है कि कौन सबसे अच्छे कर्म करता है—यानी वे कर्म जो पूरी ईमानदारी से केवल उसी के लिए किए गए हों और पैगंबर मुहम्मद ﷺ के मार्गदर्शन के अनुसार हों।

This World Is Temporary / यह दुनिया अस्थायी है

Allah says:

अल्लाह फरमाता है:

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ

Reference: Qur'an 3:185

The life of this world is nothing but a temporary enjoyment of delusion.

दुनिया की ज़िंदगी केवल धोखे का थोड़े समय का लाभ है।

This verse does not mean that all worldly blessings are evil. Rather, it warns us against becoming so attached to worldly pleasures that we forget Allah and the Hereafter.

इस आयत का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि दुनिया की सभी नेमतें (वरदान) बुरी हैं। बल्कि, यह हमें दुनिया

के सुख-सुविधाओं में इस कदर खो जाने से रोकती है कि हम अल्लाह और आख़िरत (परलोक) को ही भूल जाएं।

Islam Teaches Balance / इस्लाम संतुलन सिखाता है

Islam does not encourage people to abandon the world completely. The Prophet Muhammad ﷺ worked, traded, married, raised a family, helped the poor, led the community, and worshipped Allah.

इस्लाम लोगों को दुनिया को पूरी तरह से छोड़ देने के लिए नहीं कहता। पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने काम किया, व्यापार किया, निकाह किया, परिवार पाला, गरीबों की मदद की, समाज का नेतृत्व किया और अल्लाह की इबादत भी की।

A Muslim should earn halal income, care for parents and family, seek beneficial knowledge, help society, worship Allah sincerely, and prepare for the Hereafter. Balance is one of the beautiful characteristics of Islam.

एक मुसलमान को हलाल कमाई करनी चाहिए, अपने माता-पिता और परिवार की देखभाल करनी चाहिए, फ़ायदेमंद ज्ञान हासिल करना चाहिए, समाज की मदद करनी चाहिए, सच्चे दिल से अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और आख़िरत की तैयारी करनी चाहिए। संतुलन ही इस्लाम की सबसे खूबसूरत खूबियों में से एक है।

The World Is a Journey / दुनिया एक सफ़र है

The Messenger of Allah ﷺ said: "Be in this world as though you were a stranger or a traveler.

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया: "इस दुनिया में ऐसे रहो जैसे तुम एक अजनबी हो या कोई मुसाफ़िर हो।"
Reference: Sahih al-Bukhari (6416)

Explanation: A traveler never believes that the road is his permanent home. He carries only what he needs. He never forgets his destination. Likewise, a believer remembers that his final destination is not this world, but the Hereafter.

व्याख्या: एक मुसाफ़िर कभी भी रास्ते को अपना स्थायी घर नहीं मानता। वह अपने साथ केवल उतना ही सामान रखता है जितने की उसे ज़रूरत होती है। वह कभी अपनी मंज़िल को नहीं भूलता। इसी तरह, एक मोमिन (आस्थावान) हमेशा याद रखता है कि उसकी असली मंज़िल यह दुनिया नहीं, बल्कि आख़िरत है। [1]

Wealth Is Not Success / दौलत कामयाबी नहीं है

Many people believe success means more money, bigger houses, expensive cars, fame, and power. Islam teaches something different.

बहुत से लोग मानते हैं कि कामयाबी का मतलब ज़्यादा पैसा, बड़े घर, महंगी गाड़ियां, शोहरत और ताकत है। इस्लाम कुछ अलग सिखाता है।

Real success is meeting Allah while He is pleased with us. A poor believer may be more successful than a wealthy king if he dies with sincere faith and righteous deeds.

असली कामयाबी अल्लाह के सामने इस हाल में हाजिर होना है कि वह हमसे राज़ी (प्रसन्न) हो। एक गरीब मोमिन एक अमीर राजा से कहीं ज़्यादा कामयाब हो सकता है यदि उसकी मौत सच्चे ईमान और नेक आमाल (अच्छे कर्मों) के साथ होती है।

Every Blessing Is a Test / हर नेमत एक परीक्षा है

Allah tests people in different ways. Some are tested with wealth, some with poverty, some with health, some with illness, some with power, and some with weakness.

अल्लाह लोगों को अलग-अलग तरीकों से आज़माता है। किसी को दौलत देकर आज़माया जाता है, तो किसी

को गरीबी से। किसी को सेहत देकर, तो किसी को बीमारी से। किसी को ताकत देकर, तो किसी को कमज़ोरी से।

Every test is an opportunity to earn Allah's pleasure. The Qur'an teaches that the best response to blessings is gratitude (Shukr) and the best response to hardship is patience (Sabr).
हर परीक्षा अल्लाह की रज़ा हासिल करने का एक मौका है। क़ुरआन सिखाता है कि नेमतों पर सबसे बेहतरीन प्रतिक्रिया शुक्र (कृतज्ञता) जताना है और मुश्किलों पर सबसे बेहतरीन प्रतिक्रिया सब्र (धैर्य) रखना है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself: Am I living only for this world? If I die today, am I ready to meet Allah? Do I thank Allah for His blessings? Do I remember Allah during both happiness and hardship? Am I preparing for my eternal life? A believer should ask these questions regularly.

अपने आप से पूछें: क्या मैं सिर्फ इस दुनिया के लिए जी रहा हूँ? अगर मेरी मौत आज हो जाए, तो क्या मैं अल्लाह से मिलने के लिए तैयार हूँ? क्या मैं अल्लाह की नेमतों के लिए उसका शुक्र अदा करता हूँ? क्या मैं खुशी और परेशानी दोनों ही हालातों में अल्लाह को याद रखता हूँ? क्या मैं अपने स्थायी जीवन की तैयारी कर रहा हूँ? एक मोमिन को नियमित रूप से खुद से ये सवाल पूछने चाहिए।

Key Lessons / मुख्य सबक

This world is temporary. The Hereafter is eternal. Every blessing is a test. Every hardship is a test. Success is measured by faith and righteous deeds. A Muslim should benefit from this world without becoming attached to it. Every day is an opportunity to move closer to Allah.

यह दुनिया अस्थायी है। आख़िरत हमेशा रहने वाली है। हर नेमत एक परीक्षा है। हर मुश्किल एक परीक्षा है। कामयाबी का पैमाना ईमान और नेक कर्म हैं। एक मुसलमान को इस दुनिया से फायदा तो उठाना चाहिए लेकिन इसके मोह में नहीं बंधना चाहिए। हर नया दिन अल्लाह के और करीब आने का एक बेहतरीन मौका है।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Ad-Dunya is not our permanent home. It is a place of examination where Allah tests every human being through blessings and hardships.

अद-दुनिया (यह संसार) हमारा स्थायी घर नहीं है। यह परीक्षा की एक जगह है जहाँ अल्लाह हर इंसान को नेमतों और मुश्किलों के ज़रिए आज़माता है।

Islam teaches balance—benefit from the lawful blessings of this world, but never let them distract you from your Creator or your preparation for the Hereafter.

इस्लाम हमें संतुलन सिखाता है—इस दुनिया की जायज़ (हलाल) चीज़ों का आनंद लें, लेकिन उन्हें कभी भी अपने बनाने वाले (ख़ालिक़) से या अपनी आख़िरत की तैयारी से दूर न होने दें।

A believer lives in this world with gratitude, patience, sincerity, and hope, always remembering that true success is not measured by worldly achievements, but by attaining Allah's pleasure and entering Jannat-ul-Firdaws.

एक मोमिन इस दुनिया में शुक्र, सब्र, इख़्लास और उम्मीद के साथ जीता है, और हमेशा याद रखता है कि असली कामयाबी दुनिया की उपलब्धियों से नहीं, बल्कि अल्लाह की रज़ा हासिल करने और जन्नत-उल-फिरदौस में दाखिल होने से तय होती है।

End of Chapter 1 / अध्याय 1 समाप्त

CHAPTER 2 जीवन का उद्देश्य

The Purpose of Life

غاية الحياة

Introduction / परिचय

Every person, regardless of religion, nationality, or background, eventually asks one important question: "Why am I here?"

हर व्यक्ति, चाहे उसका धर्म, राष्ट्रीयता या पृष्ठभूमि कुछ भी हो, अंततः एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछता है: "मैं यहाँ क्यों हूँ?"

Some believe life is only about earning money. Some think success means fame and power. Others believe happiness comes from worldly pleasures alone.

कुछ लोगों का मानना है कि जीवन का उद्देश्य केवल पैसा कमाना है। कुछ सोचते हैं कि सफलता का मतलब शोहरत और ताकत है। दूसरे मानते हैं कि खुशी केवल सांसारिक सुखों से मिलती है।

Islam provides a clear and meaningful answer. Human beings were not created by chance or without purpose. Every person has been created by Allah with wisdom, responsibility, and a noble purpose.

इस्लाम एक स्पष्ट और सार्थक उत्तर देता है। मनुष्य का निर्माण संयोग से या बिना किसी उद्देश्य के नहीं हुआ है। हर इंसान को अल्लाह ने हिकमत (बुद्धिमानी), ज़िम्मेदारी और एक महान उद्देश्य के साथ पैदा किया है।

Understanding the purpose of life changes the way a person thinks, works, worships, and deals with others. When a believer understands why he was created, every action—whether praying, working, helping others, or raising a family—can become an act of worship.

जीवन के उद्देश्य को समझना एक व्यक्ति के सोचने, काम करने, इबादत करने और दूसरों के साथ व्यवहार करने के तरीके को बदल देता है। जब एक मोमिन (आस्थावान) यह समझ जाता है कि उसे क्यों पैदा किया गया है, तो उसका हर काम—चाहे नमाज़ पढ़ना हो, काम करना हो, दूसरों की मदद करना हो या परिवार का पालन-पोषण करना हो—इबादत बन सकता है।

Why Did Allah Create Human Beings? / अल्लाह ने इंसानों को क्यों पैदा किया?

Allah says in the Noble Qur'an:

अल्लाह क़ुरआन में फ़रमाता है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

Reference: Qur'an 51:56

I did not create the jinn and mankind except that they should worship Me.

मैंने जिन्नों और इंसानों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।

This verse explains the greatest purpose of human existence. The purpose of life is not merely to eat, sleep, work, and die.

यह आयत मानव अस्तित्व के सबसे बड़े उद्देश्य को समझाती है। जीवन का उद्देश्य केवल खाना, सोना, काम करना और मर जाना नहीं है।

The real purpose is to know Allah, to worship Allah alone, to obey His commands, to live according to His guidance, and to prepare for the eternal Hereafter.

असली उद्देश्य अल्लाह को जानना, केवल उसी की इबादत करना, उसके आदेशों का पालन करना, उसके मार्गदर्शन के अनुसार जीना और हमेशा रहने वाली आख़िरत (परलोक) की तैयारी करना है।

What Does Worship Really Mean? / इबादत का वास्तव में क्या अर्थ है?

Many people think worship means only praying or fasting. Islam teaches something much broader. Every lawful action becomes worship when it is done sincerely for Allah.

बहुत से लोग सोचते हैं कि इबादत का मतलब केवल नमाज़ पढ़ना या रोज़ा रखना है। इस्लाम इससे कहीं व्यापक (बड़ी) बात सिखाता है। हर वह काम जो शरीयत के अनुसार जायज़ है, इबादत बन जाता है जब वह सच्चे दिल से अल्लाह के लिए किया जाए।

Examples include performing Salah, reading the Qur'an, speaking the truth, helping parents, smiling at others, feeding the poor, being honest in business, earning halal income, seeking beneficial knowledge, and treating neighbours kindly.

इसके उदाहरणों में नमाज़ कायम करना, क़ुरआन पढ़ना, सच बोलना, माता-पिता की मदद करना, दूसरों को देखकर मुस्कुराना, गरीबों को खाना खिलाना, व्यापार में ईमानदार होना, हलाल कमाई करना, फ़ायदेमंद ज्ञान हासिल करना और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करना शामिल है।

A Muslim's entire life can become worship if his intention is to please Allah.

एक मुसलमान का पूरा जीवन इबादत बन सकता है यदि उसकी नीयत (इरादा) अल्लाह को राज़ी करने की हो।

Life Is a Test / जीवन एक परीक्षा है

Allah says:

अल्लाह फ़रमाता है:

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

Reference: Qur'an 67:2

He created death and life to test you as to which of you is best in deeds.
उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से कौन सबसे अच्छे कर्म करता है।

Allah is not asking who performs the greatest number of deeds. Rather, He asks who performs the best deeds.
अल्लाह यह नहीं पूछ रहा है कि कौन सबसे ज़्यादा संख्या में कर्म करता है। बल्कि, वह पूछता है कि कौन सबसे अच्छे कर्म करता है।

Scholars explain that the best deeds are those that are sincere for Allah (Ikhlāṣ) and in accordance with the Sunnah of Prophet Muhammad ﷺ.
विद्वान (उलेमा) समझाते हैं कि सबसे अच्छे कर्म वे हैं जो पूरी तरह से अल्लाह के लिए (इख़्लास के साथ) किए जाएं और पैगंबर मुहम्मद ﷺ की सुन्नत के मुताबिक हों।

The Importance of Intention (Niyyah) / नीयत (इरादे) का महत्व

The Prophet Muhammad ﷺ said: "Actions are judged by intentions, and every person will have only what he intended."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "कर्मों का दारोमदार नीयत पर है, और हर इंसान को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की।"

Reference: Sahih al-Bukhari (1) Sahih Muslim (1907) / हवाला: सहीह अल-बुख़ारी (1) सहीह मुस्लिम (1907)

This Hadith teaches one of the greatest principles in Islam. The same action can become worship—or lose its reward—depending upon the intention behind it.
यह हदीस इस्लाम के सबसे महान सिद्धांतों में से एक सिखाती है। एक ही काम इबादत बन सकता है—या अपना सवाब (पुण्य) खो सकता है—यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसके पीछे नीयत कैसी है।

For example, working honestly to support one's family is worship. Studying beneficial knowledge is worship. Smiling to make another Muslim happy is rewarded. Even eating and sleeping can become acts of worship when done with the intention of gaining strength to obey Allah.
उदाहरण के लिए, अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए ईमानदारी से काम करना इबादत है। फ़ायदेमंद ज्ञान का अध्ययन करना इबादत है। दूसरे मुसलमान को खुश करने के लिए मुस्कुराने पर भी सवाब मिलता है। यहाँ तक कि खाना और सोना भी इबादत का काम बन सकता है जब वह अल्लाह की आज्ञा मानने की ताकत हासिल करने की नीयत से किया जाए।

Success According to Islam / इस्लाम के अनुसार सफलता

The world measures success by money, fame, beauty, power, and position. Islam measures success differently.

दुनिया सफलता को पैसे, शोहरत, सुंदरता, ताकत और पद से मापती है। इस्लाम सफलता को अलग तरीके से मापता है।

Allah says:

अल्लाह फ़रमाता है:

فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ

Reference: Qur'an 3:185

Whoever is kept away from the Fire and admitted into Paradise has truly succeeded.

जिसे जहन्नम से बचाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वही वास्तव में सफल हुआ।"

This verse reminds us that real success is not temporary. It is eternal.

यह आयत हमें याद दिलाती है कि असली सफलता अस्थायी नहीं है। यह हमेशा रहने वाली है।

Practical Lessons / व्यावहारिक सबक

Begin every action with a sincere intention. Remember Allah throughout the day. Worship Allah through both prayer and good character. Do not let worldly success distract you from the Hereafter. Make every day a step towards Jannah.

हर काम की शुरुआत सच्ची नीयत से करें। दिनभर अल्लाह को याद रखें। नमाज़ और अच्छे अख़्लाक़ (चरित्र) दोनों के ज़रिए अल्लाह की इबादत करें। दुनिया की कामयाबी को खुद पर इस तरह हावी न होने दें कि आप आख़िरत को भूल जाएं। हर दिन को जन्नत की तरफ बढ़ने वाला एक कदम बनाएं।

Reflection / चिंतन

Ask yourself: Why am I living? Is my daily work bringing me closer to Allah? Do I remember Allah during both happiness and hardship? If today were my last day, would I be satisfied with my preparation for the Hereafter?

अपने आप से पूछें: मैं क्यों जी रहा हूँ? क्या मेरा रोज़मर्रा का काम मुझे अल्लाह के करीब ला रहा है? क्या मैं खुशी और परेशानी दोनों ही हालातों में अल्लाह को याद रखता हूँ? अगर आज मेरा आखिरी दिन हो, तो क्या मैं आख़िरत के लिए अपनी तैयारी से संतुष्ट हूँ?

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Life has a clear purpose. Allah created mankind to know Him, worship Him, and obey Him. Every blessing and every hardship is part of life's examination. A believer's success is not measured by wealth or fame but by sincere faith, righteous deeds, and Allah's pleasure.

जीवन का एक स्पष्ट उद्देश्य है। अल्लाह ने इंसानों को इसलिए पैदा किया ताकि वे उसे जानें, उसकी इबादत करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। हर नेमत और हर मुश्किल जीवन की परीक्षा का हिस्सा है। एक मोमिन की सफलता दौलत या शोहरत से नहीं, बल्कि सच्चे ईमान, नेक आमाल और अल्लाह की रज़ा से मापी जाती है।

When a Muslim understands the purpose of life, every moment becomes meaningful, every good deed becomes valuable, and every difficulty becomes an opportunity to earn reward from Allah.

जब एक मुसलमान जीवन के उद्देश्य को समझ लेता है, तो उसका हर पल अर्थपूर्ण हो जाता है, हर नेक काम मूल्यवान बन जाता है और हर मुश्किल अल्लाह से अज्र (पुरस्कार) पाने का एक मौका बन जाती है।

End of Chapter 2 / अध्याय 2 समाप्त

CHAPTER 3

Tawheed – The Foundation of Islam

التوحيد أساس الإسلام

तौहीद - इस्लाम की बुनियाद

Introduction / परिचय

The greatest and most important belief in Islam is Tawheed. It is the foundation upon which the entire religion stands. Every Prophet sent by Allah—from Adam (عليه السلام) to Muhammad ﷺ—called people to worship Allah alone.

इस्लाम में सबसे महान और सबसे महत्वपूर्ण अक़ीदा (विश्वास) तौहीद है। यह वह बुनियाद है जिस पर पूरा धर्म खड़ा है। अल्लाह द्वारा भेजे गए हर नबी ने—आदम (अलैहिस्सलाम) से लेकर मुहम्मद ﷺ तक—लोगों को केवल अल्लाह की इबादत करने की दावत दी।

Without Tawheed, no act of worship can truly fulfill its purpose. Prayer, fasting, charity, and Hajj all derive their value from sincere faith in Allah alone.

तौहीद के बिना, इबादत का कोई भी काम वास्तव में अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकता। नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज, इन सभी का मूल्य केवल अल्लाह पर सच्चे और शुद्ध ईमान से ही मिलता है।

Understanding Tawheed is therefore the first and most important step in understanding Islam.

इसलिए इस्लाम को समझने के लिए तौहीद को समझना सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

What Does Tawheed Mean? / तौहीद का क्या अर्थ है?

The word Tawheed (التوحيد) comes from the Arabic root و-ح-د, meaning "to make one" or "to affirm oneness."
तौहीद (التوحيد) शब्द अरबी के मूल शब्द व-ह-द (و-ح-د) से आया है, जिसका अर्थ है "एक करना" या "एकेश्वरवाद की पुष्टि करना।"

In Islamic belief, Tawheed means believing that Allah alone is the Creator, Allah alone is the Owner of everything, Allah alone deserves worship, and Allah alone possesses perfect Names and Attributes. Nothing resembles Him, and nothing shares His divinity.
इस्लामी अक़ीदे में, तौहीद का मतलब यह मानना है कि अल्लाह ही अकेला निर्माता है, अल्लाह ही हर चीज़ का एकमात्र मालिक है, अल्लाह ही अकेले इबादत के लायक है, और अल्लाह के पास ही संपूर्ण नाम और गुण (सिफ़ात) हैं। कोई भी चीज़ उसके जैसी नहीं है, और कोई भी उसकी दिव्यता में साझीदार नहीं है।

The First Message of Every Prophet / हर नबी का पहला संदेश

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ
Reference: Qur'an 16:36

We certainly sent into every nation a messenger, saying: Worship Allah and avoid false deities.
हमने हर समुदाय में एक रसूल भेजा, जो यही संदेश लेकर आया कि केवल अल्लाह की इबादत करो और झूठे पूज्यों से बचो।

This verse shows that although the laws given to different nations varied in some details, the core message of every Prophet was the same: worship Allah alone.
यह आयत दर्शाती है कि भले ही अलग-अलग उम्मतों (समुदायों) को दिए गए शरीयत के नियम कुछ विवरणों में अलग थे, लेकिन हर नबी का मूल संदेश एक ही था: केवल अल्लाह की इबादत करो।

Allah is One / अल्लाह एक है

The shortest chapter of the Qur'an that explains Tawheed is Surah Al-Ikhlas.
क़ुरआन का सबसे छोटा सूरा जो तौहीद की व्याख्या करता है, वह सूरा अल-इख़्लास है।

Arabic: قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ
Reference: Qur'an 112:1–4
Say: He is Allah, the One.
Allah, the Eternal Refuge.
He neither begets nor is born.
And there is none comparable to Him.

कह दीजिए: वह अल्लाह एक है। अल्लाह सब से बेनियाज़ है। न वह किसी का पिता है और न किसी की संतान। और उसके समान कोई नहीं।

This chapter summarizes the uniqueness of Allah and rejects every false concept that attributes partners, children, or equals to Him.
यह सूरा अल्लाह की विशिष्टता (अकेले होने) का सार प्रस्तुत करता है और उस हर झूठी अवधारणा को खारिज करता है जो उसके साथ साझीदार, संतान या बराबरी का दावा करती है।

Allah Alone Deserves Worship / केवल अल्लाह ही इबादत के लायक है

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

Arabic: وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
Reference: Qur'an 4:36

Worship Allah and associate nothing with Him.
केवल अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ।

Worship includes not only Salah but also du'a (supplication), reliance, hope, fear, sacrifice, gratitude, and every act of devotion. These acts are directed to Allah alone.
इबादत में न केवल नमाज़ शामिल है, बल्कि दुआ, तवक्कुल (भरोसा), उम्मीद, खौफ़ (डर), क़ुरबानी, शुक्र (कृतज्ञता) और भक्ति का हर कार्य शामिल है। ये सभी कार्य केवल अल्लाह के लिए ही होने चाहिए।

A Common Scholarly Framework for Understanding Tawheed / तौहीद को समझने का एक सामान्य विद्वतापूर्ण ढांचा

To help students understand the subject, many Sunni scholars explain Tawheed under three headings. These are educational categories, not separate beliefs.
विद्यार्थियों को इस विषय को आसानी से समझाने के लिए, कई सुन्नी विद्वान तौहीद को तीन श्रेणियों में समझाते हैं। ये केवल समझाने के उद्देश्य से बनाई गई श्रेणियां हैं, न कि अलग-अलग विश्वास।

1. **Tawheed ar-Rububiyyah (Lordship): Allah alone created, owns, sustains, and controls the universe. Reference: Qur'an 39:62**

तौहीद अर-रुबूबिय्याह (प्रभुत्व): केवल अल्लाह ने ही इस ब्रह्मांड को बनाया है, वही इसका मालिक है, वही इसे पाल रहा है और नियंत्रित करता है। हवाला: क़ुरआन 39:62

2. **Tawheed al-Uluhiyyah (Worship): Every act of worship belongs to Allah alone. Reference: Qur'an 1:5**
   तौहीद अल-उलूहिय्याह (इबादत): इबादत का हर एक कार्य केवल और केवल अल्लाह के लिए है। हवाला: क़ुरआन 1:5

3. **Tawheed al-Asma waṣ-Ṣifat (Names and Attributes): Allah's Beautiful Names and Attributes are affirmed as mentioned in the Qur'an and authentic Sunnah, without denying them, changing their meanings, asking "how", or comparing Allah to His creation. Reference: Qur'an 42:11**
   तौहीद अल-अस्मा वस्सफ़ात (नाम और गुण): अल्लाह के खूबसूरत नामों और गुणों को उसी तरह स्वीकार किया जाता है जैसा कि क़ुरआन और सहीह सुन्नत में बताया गया है, बिना उनका खंडन किए, बिना उनका अर्थ बदले, बिना "कैसे" पूछे और बिना अल्लाह की तुलना उसकी रचना से किए। हवाला: क़ुरआन 42:11

The Greatest Sin / सबसे बड़ा गुनाह

The opposite of Tawheed is Shirk—associating partners with Allah in worship or attributing to others what belongs only to Him.
तौहीद का उल्टा 'शिर्क' है—यानी इबादत में अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाना या दूसरों में उन गुणों को मानना जो केवल अल्लाह के हैं।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

Arabic: دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا
Reference: Qur'an 4:48

English: "Indeed, Allah does not forgive associating partners with Him if a person dies without repentance, but He forgives what is less than that for whom He wills."
Hindi: "निस्संदेह अल्लाह अपने साथ साझी ठहराए जाने को (यदि बिना तौबा के मृत्यु हो) माफ़ नहीं करता, जबकि इसके अलावा जिसे चाहे माफ़ कर देता है।"

This verse highlights the seriousness of preserving pure worship for Allah alone.
यह आयत केवल अल्लाह के लिए शुद्ध रूप से इबादत को बनाए रखने की गंभीरता और महत्व को उजागर करती है।

Authentic Hadith / प्रामाणिक हदीस

The Prophet ﷺ said: "Whoever dies while knowing that there is no deity worthy of worship except Allah will enter Paradise."

पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई इस हाल में मरे कि वह जानता हो कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं है, वह जन्नत में दाखिल होगा।"

Reference: Sahih Muslim (26) / हवाला: सहीह मुस्लिम (26)

This hadith emphasizes the importance of sincere belief in Tawheed, accompanied by faith and righteous deeds.
यह हदीस ईमान और नेक आमाल के साथ-साथ तौहीद में सच्चे विश्वास के महत्व पर ज़ोर देती है।

Common Misconceptions / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "Tawheed only means believing that Allah exists."
गलतफहमी 1: "तौहीद का मतलब सिर्फ यह मानना है कि अल्लाह का अस्तित्व है।"

Correction: Tawheed includes believing in Allah's Lordship, worshipping Him alone, and affirming His Names and Attributes as taught in the Qur'an and authentic Sunnah.
सुधार: तौहीद में अल्लाह के प्रभुत्व को मानना, केवल उसी की इबादत करना, और उसके नामों व गुणों की उसी तरह पुष्टि करना शामिल है जैसा कि क़ुरआन और प्रामाणिक सुन्नत में सिखाया गया है।

Misconception 2: "If I pray, nothing else matters."
गलतफहमी 2: "अगर मैं नमाज़ पढ़ता हूँ, तो बाकी कुछ मायने नहीं रखता।"

Correction: Prayer must be accompanied by sincere faith, lawful actions, and obedience to Allah.
सुधार: नमाज़ के साथ-साथ सच्चा ईमान, जायज़ (हलाल) काम और अल्लाह की पूरी आज्ञाकारिता भी ज़रूरी है।

Practical Lessons / व्यावहारिक सबक

Begin every action with a sincere intention. Worship Allah alone. Make du'a directly to Allah. Learn the Beautiful Names of Allah. Read Surah Al-Ikhlas regularly and reflect on its meanings. Avoid every form of shirk and seek authentic Islamic knowledge.
हर काम की शुरुआत सच्ची नीयत से करें। केवल अल्लाह की इबादत करें। सीधे अल्लाह से दुआ मांगें। अल्लाह के खूबसूरत नामों को सीखें। नियमित रूप से सूरा अल-इख़्लास पढ़ें और इसके अर्थों पर विचार करें। शिर्क के हर रूप से बचें और प्रामाणिक इस्लामी ज्ञान प्राप्त करें।

Self-Assessment / आत्म-मूल्यांकन

Ask yourself: Do I sincerely worship Allah alone? Do I rely upon Allah before anyone else? Am I learning the meanings of Allah's Beautiful Names? Is my worship based on the Qur'an

and authentic Sunnah?
अपने आप से पूछें: क्या मैं सच्चे दिल से केवल अल्लाह की इबादत करता हूँ? क्या मैं किसी और से पहले अल्लाह पर भरोसा करता हूँ? क्या मैं अल्लाह के खूबसूरत नामों के अर्थ सीख रहा हूँ? क्या मेरी इबादत क़ुरआन और सहीह सुन्नत पर आधारित है?

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Tawheed is the foundation of Islam and the message of every Prophet. It means believing in Allah's absolute oneness in His Lordship, worship, and perfect Names and Attributes. Every act of worship must be directed to Allah alone, and protecting Tawheed is the greatest responsibility of every Muslim.
तौहीद इस्लाम की बुनियाद और हर नबी का संदेश है। इसका अर्थ अल्लाह के प्रभुत्व, इबादत और उसके संपूर्ण नामों व गुणों में उसकी पूर्ण एकता पर विश्वास करना है। इबादत का हर कार्य केवल अल्लाह के लिए होना चाहिए, और तौहीद की रक्षा करना हर मुसलमान की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

A believer who understands Tawheed develops complete trust in Allah, worships Him sincerely, and lives with the certainty that true success lies in pleasing Him alone.
एक मोमिन जो तौहीद को समझ लेता है, उसके भीतर अल्लाह पर पूरा भरोसा पैदा होता है, वह सच्चे मन से उसकी इबादत करता है, और इस यक़ीन के साथ जीता है कि असली सफलता केवल उसी को राज़ी करने में है।

End of Chapter 3 / अध्याय 3 समाप्त

CHAPTER 4
The Six Pillars of Iman (Faith)

أركان الإيمان الستة
ईमान के छह स्तंभ

Introduction / परिचय

Islam is built upon two foundations: Correct Belief (Iman) and Righteous Actions (Amal Salih). A person's actions become meaningful only when they are based upon correct faith.
इस्लाम दो बुनियादों पर टिका है: सही अक़ीदा (ईमान) और नेक अमल (अच्छे कर्म)। किसी व्यक्ति के कर्म केवल तभी सार्थक होते हैं जब वे सही ईमान पर आधारित हों।

For example, a building cannot stand without a strong foundation. Likewise, worship cannot reach its true purpose without sound belief. The Six Pillars of Iman define the

essential beliefs that every Muslim must accept with sincerity.
उदाहरण के लिए, एक इमारत एक मजबूत नींव के बिना खड़ी नहीं हो सकती। इसी तरह, सही विश्वास के बिना इबादत अपने वास्तविक उद्देश्य तक नहीं पहुँच सकती। ईमान के छह स्तंभ उन आवश्यक मान्यताओं को परिभाषित करते हैं जिन्हें हर मुसलमान को सच्चे दिल से स्वीकार करना चाहिए।

These pillars were explained by Prophet Muhammad ﷺ in the famous Hadith of Jibril (Gabriel), one of the most important narrations in Islam.
इन स्तंभों की व्याख्या पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने प्रसिद्ध हदीस-ए-जिब्रील में की थी, जो इस्लाम की सबसे महत्वपूर्ण रिवायतों में से एक है।

What is Iman? / ईमान क्या है?

The Arabic word Iman (الإيمان) means firm belief, acceptance, and trust. Islamic scholars explain that Iman consists of belief in the heart, statement by the tongue, and actions of the limbs.
अरबी शब्द ईमान (الإيمان) का अर्थ है दृढ़ विश्वास, स्वीकार्यता और भरोसा। इस्लामी विद्वान समझाते हैं कि ईमान में दिल का विश्वास, ज़ुबान से इक़रार और शरीर के अंगों द्वारा किए जाने वाले अमल (कार्य) शामिल हैं।

Iman increases through obedience to Allah and decreases through sins.
ईमान अल्लाह की आज्ञाकारिता (इबादत) से बढ़ता है और गुनाहों से घटता है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ
Qur'an 48:4

So that they may increase in faith along with their faith."
ताकि उनका ईमान और बढ़ जाए।

This verse shows that faith is not static; it can grow stronger through worship, knowledge, and righteous deeds.
यह आयत दर्शाती है कि ईमान स्थिर नहीं रहता; यह इबादत, ज्ञान और नेक कर्मों के माध्यम से और अधिक मजबूत हो सकता है।

The Hadith of Jibril / हदीस-ए-जिब्रील

'Umar ibn al-Khattab (رضي الله عنه) narrated that one day Angel Jibril came to the Prophet ﷺ in the form of a man and asked him about Islam, Iman, and Ihsan.

'उमर इब्न अल-ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि एक दिन फ़रिश्ते जिब्रील एक व्यक्ति के रूप में पैगंबर मुहम्मद ﷺ के पास आए और उनसे इस्लाम, ईमान और इहसान के बारे में पूछा।

When asked about Iman, the Prophet ﷺ replied: "It is to believe in Allah, His angels, His books, His messengers, the Last Day, and Divine Decree (Qadr), both its good and what appears difficult to you."
जब ईमान के बारे में पूछा गया, तो पैगंबर ﷺ ने उत्तर दिया: "यह अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत (अंतिम दिन) पर, और तक़दीर पर विश्वास करना है, चाहे वह अच्छी हो या वह जो तुम्हें कठिन लगे।"

Reference: Sahih Muslim (Hadith 8) / हवाला: सहीह मुस्लिम (हदीस 8)

This hadith forms the foundation of Islamic belief.
यह हदीस इस्लामी अक़ीदे (विश्वास) की बुनियाद बनाती है।

The Six Pillars of Iman / ईमान के छह स्तंभ

1. Belief in Allah (الإيمان بالله) / अल्लाह पर ईमान

This is the greatest pillar. A Muslim believes that Allah alone created everything, Allah alone deserves worship, Allah has no partner, Allah knows everything, Allah hears every prayer, and Allah is Most Merciful and Most Just.
यह सबसे बड़ा स्तंभ है। एक मुसलमान का यह विश्वास है कि केवल अल्लाह ने ही सब कुछ पैदा किया है, केवल अल्लाह ही इबादत के लायक है, अल्लाह का कोई साझीदार नहीं है, अल्लाह सब कुछ जानता है, अल्लाह हर दुआ सुनता है, और अल्लाह अत्यंत दयालु और परम न्यायप्रिय है।

Qur'an: اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
Reference: Qur'an 39:62

Allah is the Creator of all things.
अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है।

2. Belief in the Angels (الإيمان بالملائكة) / फ़रिश्तों पर ईमान

Angels are noble creations of Allah made from light. They never disobey Allah. Some of the well-known angels include Jibril (Gabriel) who brought revelation, Mikail (Michael) who is responsible for provision by Allah's command, Israfil who will blow the Trumpet by Allah's command, Malak al-Mawt who is the Angel of Death, and Kiraman Katibin who record human deeds.
फ़रिश्ते नूर (प्रकाश) से बनी अल्लाह की नेक मख्लूक (रचना) हैं। वे कभी भी अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते। कुछ प्रसिद्ध फ़रिश्तों में जिब्रील शामिल हैं जो वह्य (प्रकाशना) लाते थे, मीकाईल जो अल्लाह के हुक्म से रिज़्क़ और बारिश के ज़िम्मेदार हैं, इसराफ़ील जो अल्लाह के हुक्म से सूर (शंख) फूकेंगे, मलक-अल-मौत जो मौत के फ़रिश्ते हैं, और किरामल कातिबीन जो इंसानों के कर्मों को लिखते हैं।

Qur'an: لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ
Reference: Qur'an 66:6

They do not disobey Allah in what He commands them.
वे अल्लाह की किसी आज्ञा की अवज्ञा नहीं करते।

3. Belief in Allah's Books (الإيمان بالكتب) / अल्लाह की किताबों पर ईमान

Allah revealed scriptures to guide humanity. Among them are the Scrolls of Ibrahim, the Tawrah (Torah), the Zabur (Psalms), the Injil (Gospel), and the Noble Qur'an. The Qur'an is the final revelation and Muslims believe Allah has preserved it.
अल्लाह ने मानवता के मार्गदर्शन के लिए किताबें उतारीं। उनमें इब्राहिम के सहीफ़े, तौरात, ज़बूर, इंजील और पवित्र क़ुरआन शामिल हैं। क़ुरआन अंतिम ईश्वरीय संदेश है और मुसलमानों का विश्वास है कि अल्लाह ने स्वयं इसकी रक्षा की है।

Qur'an: إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ
Reference: Qur'an 15:9

Indeed, We have sent down the Reminder (the Qur'an), and indeed We will preserve it.
निस्संदेह हमने ही क़ुरआन उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं।

4. Belief in the Messengers (الإيمان بالرسل) / रसूलों पर ईमान

Allah sent Prophets and Messengers to every nation. Among the greatest are Adam, Nuh (Noah), Ibrahim (Abraham), Musa (Moses), Isa (Jesus), and Muhammad ﷺ. Muslims love and respect all Prophets without rejecting any of them.
अल्लाह ने हर कौम में नबी और रसूल भेजे। सबसे महान रसूलों में आदम, नूह, इब्राहिम, मूसा, ईसा और मुहम्मद ﷺ शामिल हैं। मुसलमान बिना किसी भेदभाव के सभी नबियों से प्यार और उनका सम्मान करते हैं।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ
Qur'an 2:285

We make no distinction between any of His Messengers.
हम अल्लाह के किसी भी रसूल में भेदभाव नहीं करते।

Muhammad ﷺ is the final Prophet.
पैगंबर मुहम्मद ﷺ अंतिम नबी हैं।

Reference: Qur'an 33:40 / हवाला: क़ुरआन 33:40

5. Belief in the Last Day (الإيمان باليوم الآخر) / आख़िरत (अंतिम दिन) पर ईमान

A Muslim believes that every soul will die, everyone will be resurrected, every deed will be judged, Jannah (Paradise) and Jahannam (Hellfire) are real, and Allah's judgment is

perfectly just.
एक मुसलमान का विश्वास है कि हर जीव को मरना है, प्रलय के दिन सबको दोबारा जीवित किया जाएगा, हर कर्म का हिसाब होगा, जन्नत और जहन्नम पूरी तरह सच हैं, और अल्लाह का न्याय बिल्कुल पूर्ण और निष्पक्ष है।

Qur'an: كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْ
Qur'an 3:185

Every soul shall taste death."
हर जीव को मौत का मज़ा चखना है।

6. Belief in Divine Decree (الإيمان بالقدر) / तक़दीर पर ईमान

A Muslim believes that Allah's knowledge encompasses everything and that nothing occurs outside His knowledge and wisdom. At the same time, human beings are accountable for the choices they make.
एक मुसलमान का यह विश्वास है कि अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है और उसकी मर्ज़ी व हिकमत के बिना कुछ भी नहीं होता। इसके साथ ही, इंसान अपने द्वारा चुने गए फैसलों के लिए जवाबदेह है।

Qur'an: إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ
Qur'an 54:49

Indeed, We created everything according to a measure.
निस्संदेह हमने हर चीज़ को एक निश्चित माप और तक़दीर के साथ पैदा किया है।

How to Strengthen Iman / ईमान को मजबूत कैसे करें

To strengthen your faith, you should read the Qur'an daily, learn authentic Islamic knowledge, and pray the five daily prayers. It is also important to remember Allah frequently, keep righteous company, avoid sins, repent quickly, and reflect upon Allah's creation.
अपने ईमान को मजबूत करने के लिए आपको रोज़ाना क़ुरआन पढ़ना चाहिए, प्रामाणिक इस्लामी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और पाँचों वक्त की नमाज़ पाबंदी से पढ़नी चाहिए। इसके साथ ही अल्लाह का कसरत से ज़िक्र करना, नेक लोगों की सोहबत में रहना, गुनाहों से बचना, तुरंत तौबा करना और अल्लाह की बनाई मख्लूकात पर विचार करना भी बेहद ज़रूरी है।

Common Misconceptions / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "Faith alone is enough; actions are not important."
गलतफहमी 1: "सिर्फ विश्वास ही काफी है; कर्म महत्वपूर्ण नहीं हैं।"

Correction: Islam teaches that true faith naturally leads to righteous actions.
सुधार: इस्लाम सिखाता है कि सच्चा ईमान स्वाभाविक रूप से व्यक्ति को नेक कर्मों की ओर ले जाता है।

Misconception 2: "A person's faith never changes."
गलतफहमी 2: "किसी व्यक्ति का ईमान कभी नहीं बदलता।"

Correction: The Qur'an and Sunnah teach that Iman increases through obedience and decreases through disobedience.
सुधार: क़ुरआन और सुन्नत हमें सिखाते हैं कि ईमान अल्लाह की आज्ञा मानने से बढ़ता है और उसकी नाफ़रमानी से घटता है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you know the six pillars of Iman by heart and if you are increasing your faith through knowledge and worship. Think about whether you trust Allah during both ease and hardship, and if you are truly preparing for the Day when you will stand before Allah.
अपने आप से पूछें कि क्या आपको ईमान के छह स्तंभ ज़ुबानी याद हैं और क्या आप ज्ञान और इबादत के ज़रिए अपना ईमान बढ़ा रहे हैं। विचार करें कि क्या आप खुशहाली और तंगहाली दोनों में अल्लाह पर भरोसा करते हैं, और क्या आप वाकई उस दिन की तैयारी कर रहे हैं जब आपको अल्लाह के सामने खड़े होना है।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

The Six Pillars of Iman form the foundation of a Muslim's belief. They connect the believer to Allah, strengthen hope and patience, and provide certainty about the purpose of life and the reality of the Hereafter.
ईमान के छह स्तंभ एक मुसलमान के अक़ीदे की बुनियाद हैं। वे मोमिन को अल्लाह से जोड़ते हैं, उम्मीद और सब्र को मजबूत करते हैं, और जीवन के उद्देश्य व आख़िरत की सच्चाई के बारे में पूरा यक़ीन दिलाते हैं।

A Muslim who nurtures his Iman through knowledge, worship, and righteous deeds lives with confidence, gratitude, and trust in Allah in every situation.
एक मुसलमान जो ज्ञान, इबादत और नेक आमाल के ज़रिए अपने ईमान की परवरिश करता है, वह हर हाल में आत्मविश्वास, कृतज्ञता (शुक्र) और अल्लाह पर मुकम्मल भरोसे के साथ जीता है।

End of Chapter 4 / अध्याय 4 समाप्त

CHAPTER 5

The Five Pillars of Islam

أركان الإسلام الخمسة

इस्लाम के पाँच स्तंभ

Introduction

Introduction / परिचय

Faith (Iman) lives in the heart. Islam (submission to Allah) is demonstrated through actions. The Five Pillars of Islam are the practical foundation upon which every Muslim builds his daily life. Just as a building cannot stand without strong pillars, a Muslim's religious life cannot be complete without fulfilling these obligations.

ईमान (आस्था) दिल में रहता है। इस्लाम (अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण) कर्मों के माध्यम से प्रदर्शित होता है। इस्लाम के पांच स्तंभ व्यावहारिक बुनियाद हैं जिन पर हर मुसलमान अपने दैनिक जीवन का निर्माण करता है। जिस तरह कोई इमारत मजबूत स्तंभों के बिना खड़ी नहीं हो सकती, उसी तरह इन दायित्वों को पूरा किए बिना एक मुसलमान का धार्मिक जीवन अधूरा है।

These pillars are not merely rituals. Each one strengthens the believer's relationship with Allah, purifies the soul, develops discipline, and builds a just society.

ये स्तंभ केवल अनुष्ठान या रस्में नहीं हैं। इनमें से हर एक स्तंभ मोमिन के अल्लाह के साथ रिश्ते को मजबूत करता है, आत्मा को शुद्ध करता है, अनुशासन विकसित करता है और एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करता है।

The Foundation of Islam / इस्लाम की बुनियाद

Abdullah ibn Umar (رضي الله عنهما) narrated that the Messenger of Allah ﷺ said: "Islam is built upon five: testifying that there is no deity worthy of worship except Allah and that Muhammad is the Messenger of Allah, establishing prayer, giving Zakah, performing Hajj, and fasting Ramadan."

अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर रखी गई है: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।"

Reference: Sahih al-Bukhari (8) Sahih Muslim (16) / हवाला: सहीह अल-बुख़ारी (8) सहीह मुस्लिम (16)

This Hadith clearly shows that these five acts form the foundation of Islamic practice. They are the Shahadah (Declaration of Faith), Salah (Prayer), Zakah (Obligatory Charity), Sawm (Fasting in Ramadan), and Hajj (Pilgrimage to Makkah).

यह हदीस स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि ये पांच कार्य इस्लामी अमल की बुनियाद बनाते हैं। ये हैं शहादत (ईमान की घोषणा), नमाज़ (प्रार्थना), ज़कात (अनिवार्य दान), सौम (रमज़ान के रोज़े), और हज (मक्का की तीर्थयात्रा)।

First Pillar: Shahadah (Declaration of Faith) / पहला स्तंभ: शहादत (ईमान की घोषणा)

الشهادة / शहादत

أشهد أن لا إله إلا الله، وأشهد أن محمدًا رسول الله

I bear witness that there is no deity worthy of worship except Allah, and I bear witness that Muhammad is the Messenger of Allah.
मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

The Shahadah is not merely a statement spoken by the tongue. It requires belief in the heart, acceptance of Allah's guidance, obedience to His commands, and following the Sunnah of Prophet Muhammad ﷺ. A person enters Islam by sincerely accepting this testimony.
शहादत केवल ज़ुबान से बोला जाने वाला कथन नहीं है। इसके लिए दिल में विश्वास, अल्लाह के मार्गदर्शन की स्वीकार्यता, उसके आदेशों का पालन और पैगंबर मुहम्मद ﷺ की सुन्नत का अनुसरण करना आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति इस गवाही को सच्चे दिल से स्वीकार करके ही इस्लाम में प्रवेश करता है।

Second Pillar: Salah (Prayer) / दूसरा स्तंभ: नमाज़

الصلاة / नमाज़

Salah is the greatest act of worship after the Shahadah. It is the daily connection between the servant and Allah.
शहादत के बाद नमाज़ इबादत का सबसे बड़ा कार्य है। यह बंदे और अल्लाह के बीच का दैनिक संपर्क माध्यम है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

Arabic: إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ
Reference: Qur'an 29:45
Indeed, prayer restrains from immorality and wrongdoing.
निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुरे कामों से रोकती है।

The five daily prayers are Fajr, Dhuhr, Asr, Maghrib, and Isha. Prayer is not only an obligation but also a source of peace, discipline, humility, and spiritual strength.

पाँच दैनिक नमाज़ें फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा हैं। नमाज़ न केवल एक फ़र्ज़ (कर्तव्य) है बल्कि शांति, अनुशासन, नम्रता और आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत भी है।

Third Pillar: Zakah (Obligatory Charity) / तीसरा स्तंभ: ज़कात (अनिवार्य दान)

الزكاة / ज़कात

Zakah purifies wealth and helps establish justice within society. It reminds Muslims that wealth is a trust from Allah.
ज़कात धन को शुद्ध करती है और समाज के भीतर न्याय स्थापित करने में मदद करती है। यह मुसलमानों को याद दिलाती है कि धन अल्लाह की ओर से एक अमानत है। [1, 2]

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

Arabic: وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
Reference: Qur'an 2:43

Establish prayer and give Zakah.
नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो।

Zakah is obligatory only for Muslims whose wealth reaches the prescribed Nisab and remains above it for one lunar year. It is an act of worship and social responsibility.
ज़कात केवल उन मुसलमानों के लिए अनिवार्य है जिनका धन निर्धारित निसाब (न्यूनतम सीमा) तक पहुँच जाता है और एक चंद्र वर्ष तक उससे ऊपर रहता है। यह इबादत और सामाजिक ज़िम्मेदारी का एक कार्य है।

Fourth Pillar: Sawm (Fasting in Ramadan) / चौथा स्तंभ: सौम (रमज़ान के रोज़े)

الصيام / रमज़ान के रोज़े

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ... لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ
Reference: Qur'an 2:183

O you who believe! Fasting has been prescribed for you... so that you may attain Taqwa.
Hindi: "ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं... ताकि तुम तक़वा हासिल कर सको।

Fasting teaches patience, self-control, gratitude, compassion for the poor, and consciousness of Allah (Taqwa).
रोज़ा हमें सब्र (धैर्य), आत्म-नियंत्रण, कृतज्ञता (शुक्र), गरीबों के प्रति सहानुभूति और अल्लाह का डर (तक़वा) सिखाता है।

Fifth Pillar: Hajj (Pilgrimage) / पांचवां स्तंभ: हज (तीर्थयात्रा)

الحج / हज

Hajj is obligatory once in a lifetime for every Muslim who is physically and financially able.
हज हर उस मुसलमान के लिए जीवन में एक बार अनिवार्य है जो शारीरिक और वित्तीय रूप से सक्षम है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا
Reference: Qur'an 3:97

Pilgrimage to the House is a duty owed to Allah by those who are able to undertake it.
जो लोग सामर्थ्य रखते हैं, उन पर अल्लाह के लिए इस घर (काबा) का हज करना अनिवार्य है।

The Prophet ﷺ said: "Whoever performs Hajj for Allah and avoids sinful speech and sinful conduct returns as free from sin as the day his mother gave birth to him."
पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह के लिए हज किया और इस दौरान अभद्र भाषा व बुरे व्यवहार से बचा, वह गुनाहों से इस तरह पाक होकर लौटता है जैसे उस दिन था जब उसकी माँ ने उसे जन्म दिया था।"

Reference: Sahih al-Bukhari (1521) Sahih Muslim (1350) / हवाला: सहीह अल-बुख़ारी (1521) सहीह मुस्लिम (1350)

The Wisdom Behind the Five Pillars / पांच स्तंभों के पीछे की हिकमत

Regarding the Shahadah, its spiritual benefit is that it purifies belief.
शहादत के संबंध में, इसका आध्यात्मिक लाभ यह है कि यह अक़ीदे (विश्वास) को शुद्ध करती है। [1]

Regarding Salah, its spiritual benefit is that it connects the heart with Allah.
नमाज़ के संबंध में, इसका आध्यात्मिक लाभ यह है कि यह दिल को अल्लाह से जोड़ती है। [1]

Regarding Zakah, its spiritual benefit is that it purifies wealth and helps society.
ज़कात के संबंध में, इसका आध्यात्मिक लाभ यह है कि यह धन को शुद्ध करती है और समाज की मदद करती है।

Regarding Sawm, its spiritual benefit is that it develops Taqwa and self-control.
सौम (रोज़े) के संबंध में, इसका आध्यात्मिक लाभ यह है कि यह तक़वा और आत्म-नियंत्रण विकसित करता है।

Regarding Hajj, its spiritual benefit is कि it demonstrates unity, sacrifice, and submission.
हज के संबंध में, इसका आध्यात्मिक लाभ यह है कि यह एकता, क़ुरबानी और आज्ञाकारिता को प्रदर्शित करता है।

Common Misconceptions / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "Islam is only about rituals."
गलतफहमी 1: "इस्लाम केवल रस्मों-रिवाजों के बारे में है।"

Correction: No. The Five Pillars are the foundation, but Islam also teaches honesty, justice, mercy, kindness, family values, and good character.
सुधार: नहीं। पांच स्तंभ तो बुनियादी ढांचा हैं, लेकिन इस्लाम ईमानदारी, न्याय, दया, करुणा, पारिवारिक मूल्यों और अच्छे अख़्लाक़ (चरित्र) की भी शिक्षा देता है।

Misconception 2: "Good intentions alone are enough."
गलतफहमी 2: "केवल अच्छे इरादे ही काफी हैं।"

Correction: Islam teaches that sincere intentions should be accompanied by righteous actions.
सुधार: इस्लाम सिखाता है कि सच्चे इरादों (नीयत) के साथ नेक आमाल (अच्छे कर्म) का होना भी ज़रूरी है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you protect your Shahadah through correct belief and if you are regular in the five daily prayers. Think about whether you fulfil your financial obligations honestly, if fasting has improved your character, and if you are preparing for Hajj if Allah gives you the ability.
अपने आप से पूछें कि क्या आप सही अक़ीदे के माध्यम से अपनी शहादत की रक्षा करते हैं और क्या आप पाँचों वक्त की नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं। इस पर विचार करें कि क्या आप अपनी वित्तीय ज़िम्मेदारियों (ज़कात) को ईमानदारी से पूरा करते हैं, क्या रोज़े ने आपके चरित्र में सुधार किया है, और यदि अल्लाह ने आपको सामर्थ्य दिया है, तो क्या आप हज की तैयारी कर रहे हैं।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

The Five Pillars of Islam are the practical foundation of a Muslim's life. They nurture faith, strengthen discipline, purify wealth, develop Taqwa, and unite believers across the world.
इस्लाम के पांच स्तंभ एक मुसलमान के जीवन की व्यावहारिक बुनियाद हैं। वे ईमान की परवरिश

करते हैं, अनुशासन को मजबूत करते हैं, धन को शुद्ध करते हैं, तक़वा विकसित करते हैं और दुनिया भर के मोमिनों को आपस में जोड़ते हैं।

A Muslim who sincerely practices these pillars while maintaining good character builds a life that pleases Allah and prepares for eternal success in the Hereafter.
एक मुसलमान जो अच्छे चरित्र को बनाए रखते हुए सच्चे दिल से इन स्तंभों पर अमल करता है, वह एक ऐसा जीवन बनाता है जो अल्लाह को प्रसन्न करता है और आख़िरत में हमेशा रहने वाली सफलता की तैयारी करता है।

End of Chapter 5 / अध्याय 5 समाप्त

CHAPTER 6

Salah – The Daily Connection with Allah

الصلاة – صلة العبد بربه

नमाज़ - अल्लाह से रोज़ाना जुड़ने का माध्यम

Introduction / परिचय

Among all acts of worship in Islam, Salah (Prayer) occupies a unique position. It is the first act of worship that Allah made obligatory after the declaration of faith, and it is the first deed for which a servant will be held accountable on the Day of Judgment. It is the direct connection between a servant and his Lord.
इस्लाम में इबादत के सभी कार्यों में नमाज़ का स्थान सबसे अनोखा है। ईमान की घोषणा (शहादत) के बाद यह इबादत का पहला कार्य है जिसे अल्लाह ने अनिवार्य (फ़र्ज़) किया है। प्रलय के दिन बंदे के कर्मों में सबसे पहले नमाज़ का ही हिसाब लिया जाएगा। यह बंदे और उसके रब के बीच का सीधा संपर्क माध्यम है।

Unlike Zakah, which is paid annually, or Hajj, which is obligatory once in a lifetime, Salah reminds a believer of Allah five times every day, bringing the heart back to its Creator regardless of worldly responsibilities. A Muslim may become busy with work, family, business, studies, or travel, but Salah reminds him that the ultimate purpose of life is the worship of Allah.
सालाना दी जाने वाली ज़कात या जीवन में एक बार अनिवार्य होने वाले हज के विपरीत, नमाज़ एक मोमिन को हर दिन पाँच बार अल्लाह की याद दिलाती है, और दुनिया की तमाम ज़िम्मेदारियों के बीच उसके दिल को वापस उसके पैदा करने वाले की तरफ मोड़ती है। एक मुसलमान काम, परिवार, व्यापार, पढ़ाई या सफ़र में व्यस्त हो सकता है, लेकिन नमाज़ उसे याद दिलाती है कि जीवन का अंतिम उद्देश्य केवल अल्लाह की इबादत है।

The Command to Establish Prayer / नमाज़ कायम करने का आदेश

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ
Reference: Qur'an 2:43

Establish prayer, give Zakah, and bow with those who bow.
नमाज़ कायम करो, ज़कात अदा करो और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ रुकू करो।

Throughout the Qur'an, the command to establish Salah is frequently mentioned alongside giving Zakah, highlighting its central place in Islamic life.
पूरे क़ुरआन में, नमाज़ कायम करने का आदेश अक्सर ज़कात देने के साथ दिया गया है, जो इस्लामी जीवन में इसके केंद्रीय और महत्वपूर्ण स्थान को दर्शाता है।

Salah Was Gifted During Al-Isra' wal-Mi'raj / अल-इसरा वल-मिआराज के दौरान मिला नमाज़ का तोहफा

Unlike other obligations that were revealed on earth, Salah was made obligatory during the miraculous Night Journey and Ascension (Al-Isra' wal-Mi'raj). Initially, fifty prayers were prescribed. By Allah's mercy, they were reduced to five daily prayers, while the reward remained equivalent to fifty.
धरती पर उतारे गए अन्य फ़र्ज़ दायित्वों के विपरीत, नमाज़ को चमत्कारी रात की यात्रा और आकाशारोहण (अल-इसरा वल-मिआराज) के दौरान अनिवार्य किया गया था। शुरुआत में पचास नमाज़ें तय की गई थीं। अल्लाह की रहमत से, इन्हें घटाकर पाँच दैनिक नमाज़ें कर दिया गया, जबकि इनका सवाब (पुण्य) पचास के बराबर ही रखा गया।

Reference: Sahih al-Bukhari (349) and Sahih Muslim (162) / हवाला: सहीह अल-बुख़ारी (349) और सहीह मुस्लिम (162)

This special event shows the unique status of Salah in Islam.
यह विशेष घटना इस्लाम में नमाज़ के असाधारण और ऊंचे मर्तबे को दर्शाती है।

The Five Daily Prayers / पांच दैनिक नमाज़ें

Every adult Muslim who is accountable is required to perform five daily prayers.
हर बालिग और समझदार मुसलमान के लिए रोजाना पांच वक्त की नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है।

Fajr prayer is performed before sunrise.
फ़ज्र की नमाज़ सूर्योदय से पहले पढ़ी जाती है।

Dhuhr prayer is performed after the sun passes its highest point.
ज़ुहर की नमाज़ सूरज के ढलने (उच्चतम बिंदु को पार करने) के बाद पढ़ी जाती है।

Asr prayer is performed in the late afternoon.
अस्र की नमाज़ दोपहर के बाद (तीसरे प्रहर) पढ़ी जाती है।

Maghrib prayer is performed immediately after sunset.
मग़रिब की नमाज़ सूर्यास्त के तुरंत बाद पढ़ी जाती है।

Isha prayer is performed at night.
इशा की नमाज़ रात के समय पढ़ी जाती है।

Each prayer serves as a reminder that no matter how busy life becomes, Allah remains the center of a believer's life.
हर नमाज़ इस बात की याद दिलाती है कि जीवन चाहे कितना भी व्यस्त क्यों न हो जाए, अल्लाह ही एक मोमिन के जीवन का केंद्र है।

Prayer Protects from Sin / नमाज़ गुनाहों से बचाती है

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:
إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ

Qur'an 29:45

Indeed, prayer restrains from immorality and wrongdoing.
निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुरे कामों से रोकती है।

If Salah is performed sincerely with understanding and humility, it influences a believer's speech, actions, and character.
यदि नमाज़ को समझदारी और विनम्रता के साथ सच्चे दिल से पढ़ा जाए, तो यह एक मोमिन की बातचीत, कर्मों और चरित्र पर गहरा प्रभाव डालती है।

The First Deed to Be Accounted For / सबसे पहले हिसाब लिया जाने वाला अमल [1]

The Messenger of Allah ﷺ said: "The first matter that the servant will be brought to account for on the Day of Resurrection is the prayer. If it is sound, then the rest of his deeds will be sound; if it is deficient, then the rest of his deeds will be deficient."
अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "क़यामत के दिन बंदे के कर्मों में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा। यदि वह ठीक निकली, तो उसके बाकी सारे कर्म भी ठीक रहेंगे; और यदि उसमें कमी निकली, तो उसके बाकी सारे कर्म भी ख़राब हो जाएंगे।

Reference: Jami' at-Tirmidhi (413) / हवाला: जामी अत-तिर्मिज़ी (413)

This narration has been graded authentic by a number of hadith scholars. This hadith highlights the importance of protecting our daily prayers.
इस रिवायत को कई हदीस विद्वानों द्वारा प्रामाणिक (सहीह) माना गया है। यह हदीस हमारी दैनिक नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने के महत्व पर ज़ोर देती है।

Khushū' – Praying with Humility / ख़ुशू – विनम्रता और एकाग्रता के साथ नमाज़

Allah praises the believers by saying:
अल्लाह मोमिनों की तारीफ़ करते हुए फ़रमाता है:

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ
Reference: Qur'an 23:1–2

Successful indeed are the believers, those who are humble and attentive in their prayers.
निश्चय ही ईमान वाले सफल हुए, जो अपनी नमाज़ में विनम्रता और एकाग्रता रखते हैं।

Khushū' means praying with a heart that is attentive, humble, and aware that one is standing before Allah.
ख़ुशू का अर्थ है ऐसे दिल से नमाज़ पढ़ना जो पूरी तरह एकाग्र, विनम्र हो और इस बात का अहसास रखता हो कि वह अल्लाह के सामने खड़ा है।

Ways to Improve Khushū' / ख़ुशू सुधारने के उपाय

To improve concentration, you should perform Wudu carefully and pray at the beginning of the prayer time whenever possible. It helps to understand the meanings of Surah Al-Fatihah and other recitations, and to remove distractions before Salah. You should pray calmly without rushing and remember that every prayer may be your last.
एकाग्रता बढ़ाने के लिए, आपको अच्छी तरह ध्यान से वज़ू करना चाहिए और जब भी संभव हो नमाज़ के शुरुआती वक़्त में ही नमाज़ पढ़नी चाहिए। सूरा अल-फ़ातिहा और अन्य सूरतों के अर्थों को समझना तथा नमाज़ शुरू करने से पहले ध्यान भटकाने वाली चीज़ों को दूर करना मददगार साबित होता है। बिना जल्दबाज़ी किए इत्मीनान से नमाज़ पढ़ें और हमेशा यह याद रखें कि हर नमाज़ आपकी आख़िरी नमाज़ हो सकती है।

The Virtue of Congregational Prayer / जमात के साथ नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

The Prophet ﷺ said: "Prayer in congregation is twenty-seven times more rewarding than prayer offered individually."
पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जमात (सामूहिक) के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़, अकेले पढ़ी जाने वाली नमाज़ की तुलना में सत्ताईस (27) गुना अधिक सवाब रखती है।"

Reference: Sahih al-Bukhari (645) and Sahih Muslim (650) / हवाला: सहीह अल-बुख़ारी (645) और सहीह मुस्लिम (650)

For men, praying in congregation at the mosque is highly emphasized. Women are also rewarded for prayer and may pray in the mosque or at home according to Islamic guidance. पुरुषों के लिए मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ पढ़ने पर बहुत ज़ोर दिया गया है। महिलाओं को भी नमाज़ के लिए उतना ही सवाब मिलता है और वे इस्लामी दिशा-निर्देशों के अनुसार मस्जिद में या अपने घरों में नमाज़ पढ़ सकती हैं।

Common Mistakes in Salah / नमाज़ में होने वाली आम गलतियाँ

Many people perform Salah regularly but unknowingly reduce its quality. Examples include delaying prayer without a valid excuse, praying hastily, and allowing the mind to wander. Other mistakes include neglecting proper posture, not understanding what is being recited, and treating Salah as a routine instead of a meeting with Allah. Improving these areas can greatly increase the spiritual benefit of prayer.
कई लोग नियमित रूप से नमाज़ तो पढ़ते हैं लेकिन अनजाने में उसकी गुणवत्ता को कम कर देते हैं। इसके उदाहरणों में बिना किसी ठोस कारण के नमाज़ में देरी करना, जल्दबाज़ी में नमाज़ पढ़ना और दिमाग को इधर-उधर भटकने देना शामिल है। अन्य गलतियों में रुकू और सजदे को ठीक से न करना, जो कुछ पढ़ा जा रहा है उसके अर्थ को न समझना, और नमाज़ को अल्लाह से मुलाक़ात समझने के बजाय महज़ एक आदत या रूटीन मान लेना शामिल है। इन कमियों को सुधारने से नमाज़ का आध्यात्मिक लाभ बहुत बढ़ सकता है।

The Spiritual Benefits of Salah / नमाज़ के आध्यात्मिक लाभ

A believer who protects Salah develops discipline and finds peace during difficulties. He strengthens his relationship with Allah, learns patience and gratitude, avoids many sins, and keeps the Hereafter in mind throughout the day. Salah is not merely a duty—it is a mercy from Allah that nourishes the soul.
जो मोमिन अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करता है, उसके भीतर अनुशासन का विकास होता है और उसे मुश्किलों के दौरान सुकून मिलता है। वह अल्लाह के साथ अपने रिश्ते को मजबूत करता है, सब्र और शुक्र सीखता है, कई गुनाहों से बचता है, और पूरे दिन अपने दिमाग में आख़िरत की याद को ताज़ा रखता है। नमाज़ महज़ एक फ़र्ज़ नहीं है—यह अल्लाह की ओर से एक रहमत है जो आत्मा को पोषण देती है।

Practical Action Plan / व्यावहारिक कार्य योजना

Never miss a prayer intentionally and pray at the earliest time whenever possible. Learn the meanings of what you recite and read a short tafsir of Surah Al-Fatihah. It is also beneficial

to increase voluntary (Nafl) prayers and make sincere du'a after every Salah.
कभी भी जानबूझकर कोई नमाज़ न छोड़ें और जब भी संभव हो जल्द से जल्द वक़्त पर नमाज़ पढ़ें। आप जो कुछ भी पढ़ते हैं उसका अर्थ सीखें और सूरा अल-फ़ातिहा की संक्षिप्त तफ़्सीर (व्याख्या) पढ़ें। इसके अलावा, नफ़्ल (स्वैच्छिक) नमाज़ों को बढ़ाना और हर नमाज़ के बाद सच्चे दिल से दुआ माँगना भी बेहद फ़ायदेमंद है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you pray because it is a habit, or because you love meeting Allah, and check if you are praying on time. Reflect on whether your Salah improves your character outside the mosque, and think about whether you would be satisfied with the quality of your prayers if today were your last day.
अपने आप से पूछें कि क्या आप नमाज़ इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि यह एक आदत बन चुकी है, या इसलिए क्योंकि आपको अल्लाह से मुलाक़ात करना पसंद है, और यह भी जाँचें कि क्या आप वक्त पर नमाज़ पढ़ रहे हैं। इस बात पर विचार करें कि क्या आपकी नमाज़ मस्जिद से बाहर आपके चरित्र में सुधार लाती है, और सोचें कि यदि आज आपका आखिरी दिन हो, तो क्या आप अपनी नमाज़ों की गुणवत्ता से संतुष्ट होंगे। [1]

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Salah is the greatest practical act of worship after the Shahadah. It is a direct conversation between the servant and Allah, a source of peace, discipline, forgiveness, and guidance. A believer who guards his prayers strengthens his faith and builds a life centered around the remembrance of Allah.
शहादत के बाद नमाज़ व्यावहारिक इबादत का सबसे बड़ा कार्य है। यह बंदे और अल्लाह के बीच की सीधी बातचीत है, जो शांति, अनुशासन, क्षमा और मार्गदर्शन का स्रोत है। जो मोमिन अपनी नमाज़ों की रक्षा करता है, वह अपने ईमान को मजबूत करता है और अल्लाह के ज़िक्र के इर्द-गिर्द केंद्रित जीवन का निर्माण करता है।

Every Salah is an opportunity to renew faith, seek forgiveness, and draw closer to the Creator. The true beauty of Salah is not only in performing its movements, but in standing before Allah with sincerity, humility, and hope.
हर नमाज़ ईमान को ताज़ा करने, माफ़ी माँगने और अपने ख़ालिक़ (बनाने वाले) के करीब आने का एक बेहतरीन मौका है। नमाज़ की असली खूबसूरती केवल इसके शारीरिक अंगों को हिलाने में नहीं है, बल्कि सच्चाई, विनम्रता और उम्मीद के साथ अल्लाह के सामने खड़े होने में है।

End of Chapter 6 / अध्याय 6 समाप्त

CHAPTER 7

Rizq, Halal Earnings & Tawakkul

الرزق والكسب الحلال والتوكل على الله

रिज़्क़, हलाल रोज़ी और अल्लाह पर भरोसा

الرزق والكسب الحلال والتوكل على الله

"And whoever fears Allah, He will make for him a way out and provide for him from where he does not expect." — Qur'an 65:2–3

"और जो कोई अल्लाह से डरेगा, वह उसके लिए (मुश्किलों से) निकलने का रास्ता बना देगा और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा जहाँ से उसे गुमान (अपेक्षा) भी न हो।" — क़ुरआन 65:2–3

Chapter Objectives / अध्याय के उद्देश्य

After completing this chapter, you will understand what Rizq (Provision) means, the importance of earning Halal income, and the dangers of Haram earnings. You will also learn the true meaning of Tawakkul (Trust in Allah) and the role of effort, honesty, and gratitude in increasing Barakah.

इस अध्याय को पूरा करने के बाद, आप समझेंगे कि रिज़्क़ (आजीविका) का क्या अर्थ है, हलाल कमाई करने का क्या महत्व है, और हराम कमाई के क्या ख़तरे हैं। आप अल्लाह पर मुकम्मल भरोसे (तवक्कुल) का सही अर्थ भी जानेंगे और बरकत बढ़ाने में ईमानदारी, मेहनत और कृतज्ञता (शुक्र) की भूमिका को समझेंगे।

Introduction / परिचय

Every human being works to earn a livelihood. Some are farmers, others are teachers, engineers, doctors, labourers, business owners, or employees. Islam encourages honest work and lawful earning. In fact, seeking Halal sustenance is itself an act of worship when done with sincerity.

हर इंसान अपनी आजीविका कमाने के लिए काम करता है। कोई किसान है, तो कोई शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर, मज़दूर, व्यवसायी या कर्मचारी है। इस्लाम ईमानदारी से काम करने और जायज़ कमाई करने को बढ़ावा देता है। वास्तव में, जब सच्चे इरादे से प्रयास किया जाए, तो हलाल रोज़ी की तलाश करना अपने आप में इबादत का एक कार्य है।

Many people believe that wealth alone is a sign of Allah's pleasure. Islam teaches otherwise. Wealth may be a blessing or a test. Poverty may also be a test. What truly matters is whether a person earns lawfully, spends responsibly, and remains grateful to Allah.

बहुत से लोग मानते हैं कि केवल धन का होना ही अल्लाह की प्रसन्नता की निशानी है। इस्लाम इसके विपरीत सिखाता है। दौलत एक वरदान (नेमत) भी हो सकती है और एक परीक्षा भी। इसी तरह

गरीबी भी एक परीक्षा हो सकती है। वास्तव में जो बात मायने रखती है वह यह है कि क्या व्यक्ति कानूनी और जायज़ तरीके से कमाता है, ज़िम्मेदारी से ख़र्च करता है और अल्लाह का शुक्रगुज़ार रहता है।

A believer understands that Rizq is from Allah, but Allah also commands us to make lawful efforts while placing our trust in Him.
एक मोमिन यह समझता है कि रिज़्क़ अल्लाह की ओर से आता है, लेकिन अल्लाह हमें अपने ऊपर पूरा भरोसा रखने के साथ-साथ जायज़ कोशिशें करने का भी आदेश देता है।

What is Rizq? / रिज़्क़ क्या है?

The Arabic word Rizq (الرزق) means every provision that Allah grants His creation. Rizq includes much more than money.
अरबी शब्द रिज़्क़ (الرزق) का अर्थ हर उस साधन और नेमत से है जो अल्लाह अपनी मख्लूक (रचनाओं) को प्रदान करता है। रिज़्क़ में पैसे से कहीं बढ़कर बहुत कुछ शामिल है।

Examples of Rizq include faith (Iman), good health, knowledge, family, children, food and water, peace of mind, time, opportunities, and wealth. Every blessing comes from Allah.
रिज़्क़ के उदाहरणों में ईमान (आस्था), अच्छा स्वास्थ्य, ज्ञान, परिवार, बच्चे, भोजन और पानी, मन की शांति, समय, अवसर और धन शामिल हैं। हर एक नेमत अल्लाह की ओर से ही आती है।

Allah is Ar-Razzaq (The Provider) / अल्लाह अर-रज्ज़ाक है (रोज़ी देने वाला)

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ
Qur'an 51:58

Indeed, Allah is the Supreme Provider, the Possessor of Strength, the Most Powerful.
निस्संदेह अल्लाह ही सबसे बड़ा रोज़ी देने वाला, अत्यंत शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है।

No employer, customer, government, or business creates Rizq independently. They may be means through which Allah provides, but the ultimate Provider is Allah alone.
कोई भी नियोक्ता (मालिक), ग्राहक, सरकार या व्यवसाय स्वतंत्र रूप से रिज़्क़ पैदा नहीं करता। वे केवल माध्यम हो सकते हैं जिनके ज़रिए अल्लाह रोज़ी पहुँचाता है, लेकिन अंतिम रूप से रोज़ी देने वाला केवल अल्लाह ही है।

Seek Halal Earnings / हलाल कमाई की तलाश

Allah commands believers:
अल्लाह मोमिनों को हुक्म देता है:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا
Reference: Qur'an 2:168

O mankind! Eat from what is lawful and pure on the earth.
ऐ लोगो! धरती की हलाल और पाक चीज़ों में से खाओ।

A Muslim should always seek income through lawful means. Examples of Halal earning include honest employment, fair business, agriculture, manufacturing, professional services, lawful investments, and skilled labour.
एक मुसलमान को हमेशा जायज़ और कानूनी तरीकों से ही अपनी आमदनी तलाशनी चाहिए। हलाल कमाई के उदाहरणों में ईमानदारी की नौकरी, निष्पक्ष व्यापार, खेती, विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग), पेशेवर सेवाएँ, शरीयत के अनुसार निवेश और कुशल श्रम शामिल हैं।

Haram Earnings / हराम कमाई

Islam strictly forbids earning through unlawful means such as theft, bribery, fraud, cheating, gambling, interest (Riba), selling prohibited items, and deception in trade.
इस्लाम गैर-कानूनी और नाजायज़ तरीकों से कमाई करने की सख्त मनाही करता है, जैसे कि चोरी, रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी, जालसाजी, जुआ, ब्याज़ (रिबा), प्रतिबंधित (हराम) चीज़ों को बेचना और व्यापार में धोखा देना।

The Prophet ﷺ said: "Whoever deceives us is not one of us."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने हमें धोखा दिया, वह हममें से नहीं है।"

Reference: Sahih Muslim

Honesty is a hallmark of a true believer.
ईमानदारी एक सच्चे मोमिन की सबसे बड़ी पहचान है।

Barakah Is Better Than Abundance / बहुतायत से बेहतर बरकत है

Islam teaches that a small amount of Halal income with Barakah (Divine Blessing) is far better than large amounts of Haram wealth. A family living on lawful earnings often experiences contentment, while unlawful wealth may bring anxiety and loss of blessings.
इस्लाम सिखाता है कि बरकत (दैवीय आशीर्वाद) के साथ थोड़ी सी हलाल कमाई भी भारी मात्रा में इकट्ठी की गई हराम की दौलत से कहीं बेहतर है। जायज़ कमाई पर बसर करने वाला परिवार अक्सर संतोष और सुकून महसूस करता है, जबकि नाजायज़ धन अपने साथ मानसिक तनाव और नेमतों का छिन जाना लेकर आता है।

The Prophet ﷺ said: "The truthful and trustworthy merchant will be with the Prophets, the truthful, and the martyrs."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "सच्चा और अमानतदार (भरोसेमंद) व्यापारी (क़यामत के दिन) नबियों, सिद्दीक़ों (सच्चे लोगों) और शहीदों के साथ होगा।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

This Hadith highlights the high status of honesty in business.
यह हदीस व्यापार में ईमानदारी बरतने के ऊंचे मर्तबे को दर्शाती है।

Tawakkul (Trust in Allah) / तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा)

Tawakkul means relying upon Allah after taking the proper lawful means. It does not mean sitting idle and expecting miracles.
तवक्कुल का अर्थ है अपनी तरफ से उचित और जायज़ उपाय करने के बाद अल्लाह पर भरोसा करना। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि इंसान बेकार बैठा रहे और चमत्कारों की उम्मीद करे।

The Prophet ﷺ said: "If you were to rely upon Allah with true reliance, He would provide for you as He provides for the birds: they leave in the morning hungry and return in the evening full."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अगर तुम अल्लाह पर वैसा ही भरोसा करो जैसा कि भरोसा करने का हक है, तो वह तुम्हें उसी तरह रोज़ी देगा जैसे वह परिंदों को देता है: वे सुबह भूखे पेट निकलते हैं और शाम को पेट भरकर लौटते हैं।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

Notice that the birds leave their nests. They make effort and trust Allah for the outcome. This is the balance Islam teaches.
ध्यान दें कि पक्षी अपने घोंसले छोड़कर बाहर निकलते हैं। वे प्रयास करते हैं और परिणाम के लिए अल्लाह पर भरोसा करते हैं। यही वह संतुलन है जो इस्लाम हमें सिखाता है।

Gratitude Increases Blessings / कृतज्ञता से नेमतें बढ़ती हैं

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है: لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ
Reference: Qur'an 14:7

If you are grateful, I will surely increase you.
यदि तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा।

Gratitude is shown by thanking Allah, using blessings lawfully, helping those in need, and avoiding wastefulness.

कृतज्ञता (शुक्र) अल्लाह का आभार मानकर, उसकी दी गई नेमतों का जायज़ इस्तेमाल करके, ज़रूरतमंदों की मदद करके और फ़िज़ूलख़र्ची से बचकर व्यक्त की जाती है।

Charity Never Decreases Wealth / सदक़ा (दान) कभी धन को कम नहीं करता

The Prophet ﷺ said: "Charity does not decrease wealth."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "सदक़ा देने से माल कम नहीं होता।"

Reference: Sahih Muslim

When a believer gives sincerely for Allah's sake, Allah replaces it with something better—whether in this world, the Hereafter, or both.
जब कोई मोमिन सच्चे दिल से अल्लाह की राह में खर्च करता है, तो अल्लाह उसे उससे भी बेहतर चीज़ से नवाज़ता है—चाहे इस दुनिया में, आख़िरत में या दोनों जगह।

Practical Guidelines for Halal Rizq / हलाल रिज़्क़ के लिए व्यावहारिक दिशा-निर्देश

To apply these teachings, you should begin your work with Bismillah and be honest in every transaction. It is vital to fulfil promises and contracts, avoid fraud and deception, and pay employees fairly and on time without unjustly delaying their wages. Additionally, you should give charity regularly, thank Allah for every blessing, and trust Him completely while making a sincere effort.
इन शिक्षाओं पर अमल करने के लिए, आपको बिस्मिल्लाह के साथ अपना काम शुरू करना चाहिए और हर लेन-देन में ईमानदार रहना चाहिए। वादों और समझौतों को पूरा करना, धोखाधड़ी व चालबाज़ी से बचना, और कर्मचारियों को उनका न्यायसंगत वेतन बिना किसी देरी के समय पर देना बेहद ज़रूरी है। इसके साथ ही, नियमित रूप से दान (सदक़ा) दें, हर वरदान के लिए अल्लाह का शुक्रिया अदा करें, और अपनी सच्ची कोशिशों के साथ अल्लाह पर मुकम्मल भरोसा रखें।

Common Misconceptions / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "If someone is rich, Allah must be pleased with him."
गलतफहमी 1: "अगर कोई अमीर है, तो अल्लाह उससे ज़रूर खुश होगा।"

Correction: Not necessarily. Wealth may be a blessing or a test. True success lies in faith, gratitude, and lawful earning.
सुधार: ऐसा होना ज़रूरी नहीं है। धन एक वरदान भी हो सकता है और एक परीक्षा भी। असली सफलता ईमान, कृतज्ञता (शुक्र) और हलाल कमाई में छिपी है।

Misconception 2: "Tawakkul means doing nothing."
गलतफहमी 2: "तवक्कुल का मतलब है कुछ न करना।"

Correction: Incorrect. Islam commands both effort and trust in Allah.
सुधार: यह गलत है। इस्लाम कोशिश (मेहनत) करने और अल्लाह पर भरोसा रखने, दोनों का आदेश देता है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if your income is completely Halal and if you deal honestly with others. Reflect on whether you are grateful for what Allah has given you, if you rely upon Him while making a sincere effort, and if you spend your wealth in ways that please Him.
अपने आप से पूछें कि क्या आपकी आमदनी पूरी तरह से हलाल है और क्या आप दूसरों के साथ ईमानदारी से व्यवहार करते हैं। विचार करें कि अल्लाह ने आपको जो कुछ भी दिया है क्या आप उसके लिए शुक्रगुज़ार हैं, क्या आप अपनी सच्ची कोशिशों के साथ उस पर भरोसा करते हैं, और क्या आप अपनी दौलत को उन कामों में खर्च करते हैं जो उसे पसंद हैं।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Allah is the ultimate Provider of every blessing. A believer seeks Halal earnings through honest effort, avoids Haram income, spends responsibly, gives charity, and places complete trust in Allah.
अल्लाह ही हर नेमत को देने वाला असली मालिक है। एक मोमिन ईमानदारी से कोशिश करके हलाल रोज़ी कमाता है, हराम की कमाई से बचता है, ज़िम्मेदारी से खर्च करता है, दान देता है और अल्लाह पर पूरा भरोसा रखता है।

True wealth is not measured by the amount of money a person possesses, but by the Barakah in that wealth and the contentment Allah places in the heart. A Muslim who earns lawfully, trusts Allah sincerely, and helps others transforms his daily work into an act of worship.
असली दौलत इस बात से नहीं मापी जाती कि किसी व्यक्ति के पास कितना पैसा है, बल्कि उस धन में मौजूद बरकत और अल्लाह द्वारा दिल में डाले गए संतोष (सुकून) से मापी जाती है। एक मुसलमान जो हलाल कमाता है, सच्चे दिल से अल्लाह पर भरोसा रखता है और दूसरों की मदद करता है, वह अपने रोज़मर्रा के काम को भी इबादत में बदल देता है।

End of Chapter 7 / अध्याय 7 समाप्त

CHAPTER 8
Family Life in Islam

الحياة الأسرية في الإسلام
इस्लाम में पारिवारिक जीवन

Introduction / परिचय

Family is the first institution established by Allah for mankind. A strong family builds a strong society, while broken families often lead to social problems.
परिवार मानव जाति के लिए अल्लाह द्वारा स्थापित की गई सबसे पहली संस्था है। एक मजबूत परिवार एक मजबूत समाज का निर्माण करता है, जबकि बिखरे हुए परिवार अक्सर सामाजिक समस्याओं का कारण बनते हैं।

Islam gives detailed guidance regarding marriage, parents, children, relatives, neighbours, inheritance, and mutual respect. The Muslim family is built upon faith (Iman), love (Mawaddah), mercy (Rahmah), justice ('Adl), patience (Sabr), and mutual respect. Every member of the family has rights as well as responsibilities.
इस्लाम निकाह, माता-पिता, बच्चों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, विरासत और आपसी सम्मान के संबंध में विस्तृत मार्गदर्शन देता है। मुस्लिम परिवार की बुनियाद ईमान, प्रेम (मवद्दत), दया (रहमक), न्याय (अदल), धैर्य (सब्र) और आपसी सम्मान पर टिकी है। परिवार के हर सदस्य के पास जहाँ अधिकार हैं, वहीं उसकी कुछ ज़िम्मेदारियाँ भी हैं।

Marriage – A Blessed Relationship / निकाह – एक मुबारक रिश्ता

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً
Reference: Qur'an 30:21

Among His signs is that He created spouses for you from among yourselves so that you may find tranquility in them, and He placed between you affection and mercy.
उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जीवनसाथी बनाए ताकि तुम उनके पास सुकून पाओ, और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया रख दी।

Marriage in Islam is not merely a contract—it is a sacred covenant based on faith, compassion, trust, and mutual support.
इस्लाम में निकाह महज़ एक समझौता या कॉन्ट्रैक्ट नहीं है—यह ईमान, करुणा, विश्वास और आपसी सहयोग पर आधारित एक पवित्र बंधन है।

The Best Husband / सबसे बेहतरीन शौहर (पति)

The Prophet Muhammad ﷺ said: "The best of you are those who are best to their wives, and I am the best among you to my wives."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "तुममें से सबसे अच्छा वह है जो अपनी पत्नियों के लिए सबसे अच्छा हो, और मैं तुम सब में अपनी पत्नियों के प्रति सबसे अच्छा हूँ।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

A Muslim husband should treat his wife with kindness, respect her dignity, provide for her according to his means, speak gently, protect her rights, and consult her in family matters.
एक मुस्लिम शौहर को अपनी पत्नी के साथ दयालुता से व्यवहार करना चाहिए, उसके सम्मान की रक्षा करनी चाहिए, अपनी क्षमता के अनुसार उसका ख़र्च उठाना चाहिए, नरमी से बात करनी चाहिए, उसके अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए और पारिवारिक मामलों में उससे सलाह मशविरा करना चाहिए।

The Rights of the Wife / पत्नी के अधिकार

Islam gives women honour and legal rights. Among her rights are respect, kind treatment, financial maintenance, security, education, fairness, and the protection of her dignity.
इस्लाम महिलाओं को सम्मान और कानूनी अधिकार देता है। उसके अधिकारों में सम्मान, दयालु व्यवहार, वित्तीय रखरखाव (ख़र्च), सुरक्षा, शिक्षा, निष्पक्षता और उसके मर्तबे की हिफ़ाज़त शामिल है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ
Reference: Qur'an 4:19

Live with them in kindness.
उनके साथ भलाई और सम्मान के साथ जीवन बिताओ।

The Rights of the Husband / पति के अधिकार

Likewise, Islam teaches that the wife should respect her husband, protect his honour and property, support him in righteousness, raise children with Islamic values, and maintain trust and loyalty.
इसी तरह, इस्लाम सिखाता है कि पत्नी को अपने पति का सम्मान करना चाहिए, उसके सम्मान और संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए, नेकी के कामों में उसका साथ देना चाहिए, बच्चों की परवरिश इस्लामी मूल्यों के साथ करनी चाहिए और विश्वास व वफ़ादारी बनाए रखनी चाहिए।

Marriage succeeds when both husband and wife fulfil their responsibilities with sincerity and compassion.
वैवाहिक जीवन तब सफल होता है जब पति और पत्नी दोनों अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी और करुणा के साथ निभाते हैं।

The Status of Parents / माता-पिता का मर्तबा (स्थान)

After worshipping Allah, one of the greatest obligations is kindness towards parents.
अल्लाह की इबादत के बाद, सबसे बड़े दायित्वों में से एक माता-पिता के प्रति दयालुता और अच्छा व्यवहार करना है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
Reference: Qur'an 17:23

Your Lord has decreed that you worship none but Him and that you show excellence to your parents.
तुम्हारे पालनहार ने आदेश दिया है कि केवल उसी की इबादत करो और माता-पिता के साथ सर्वोत्तम व्यवहार करो।

The Status of the Mother / माँ का मर्तबा

A man asked the Prophet ﷺ: "Who is most deserving of my good companionship?" The Prophet ﷺ replied: "Your mother." He asked again. The Prophet ﷺ replied: "Your mother." He asked again. The Prophet ﷺ replied: "Your mother." Then he asked again. The Prophet ﷺ replied: "Then your father."
एक व्यक्ति ने पैगंबर ﷺ से पूछा: "मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार कौन है?" पैगंबर ﷺ ने उत्तर दिया: "तुम्हारी माँ।" उसने फिर पूछा। पैगंबर ﷺ ने उत्तर दिया: "तुम्हारी माँ।" उसने फिर पूछा। पैगंबर ﷺ ने उत्तर दिया: "तुम्हारी माँ।" फिर उसने दोबारा पूछा। पैगंबर ﷺ ने उत्तर दिया: "फिर तुम्हारे पिता।"

Reference: Sahih al-Bukhari and Sahih Muslim

This Hadith highlights the immense respect and honour due to one's mother.
यह हदीस माँ को दिए जाने वाले अत्यधिक सम्मान और आदर को रेखांकित करती है।

Raising Righteous Children / नेक बच्चों की परवरिश

Children are a trust from Allah. Parents should teach them Tawheed, Salah, good manners, truthfulness, respect for elders, love for the Qur'an, and love for Prophet Muhammad ﷺ. Education should develop both knowledge and character.
बच्चे अल्लाह की ओर से एक अमानत हैं। माता-पिता को उन्हें तौहीद, नमाज़, अच्छे अख़्लाक़ (शिष्टाचार), सच्चाई, बड़ों का सम्मान, क़ुरआन से प्रेम और पैगंबर मुहम्मद ﷺ से मोहब्बत सिखानी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो ज्ञान और चरित्र दोनों का विकास करे।

Maintaining Family Ties (Silat ar-Rahim) / पारिवारिक रिश्ते बनाए रखना (सिलत अर-रहिम)

The Prophet ﷺ said: "Whoever wishes that his provision be increased and his life be blessed, let him maintain family ties."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई यह चाहता है कि उसके रिज़्क़ (आजीविका) में बरकत हो और उसकी उम्र लंबी (आशीर्वादित) हो, उसे अपने पारिवारिक रिश्ते बनाए रखने चाहिए।"

Reference: Sahih al-Bukhari and Sahih Muslim

Maintaining relationships with relatives is an act of worship and a means of receiving Allah's blessings.
रिश्तेदारों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना इबादत का एक कार्य है और अल्लाह की रहमतें हासिल करने का एक ज़रिया है।

Kindness Begins at Home / दयालुता की शुरुआत घर से होती है

Many people are polite outside their homes but harsh with their families. Islam teaches the opposite. True character is shown by how a person behaves with parents, spouse, children, brothers and sisters, and relatives. The home should be a place of mercy, not fear.
कई लोग अपने घर के बाहर तो बहुत विनम्र होते हैं लेकिन अपने परिवार के साथ बड़े सख्त होते हैं। इस्लाम इसके विपरीत सिखाता है। सच्चा चरित्र इस बात से झलकता है कि व्यक्ति अपने माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चों, भाई-बहनों और रिश्तेदारों के साथ कैसा व्यवहार करता है। घर रहम (दया) की जगह होना चाहिए, डर की नहीं।

Building an Islamic Home / एक इस्लामी घर का निर्माण

To build a peaceful Muslim home, you should ensure daily Salah and read the Qur'an together. It requires honest communication, mutual respect, patience during disagreements, and forgiveness. Additionally, you should practice gratitude, make regular du'a, earn a halal livelihood, and nurture a deep love for Allah and His Messenger ﷺ.
एक शांतिपूर्ण मुस्लिम घर बनाने के लिए, आपको दैनिक नमाज़ पाबंदी से पढ़नी चाहिए और साथ मिलकर क़ुरआन की तिलावत करनी चाहिए। इसके लिए आपस में ईमानदार बातचीत, आपसी सम्मान, मतभेदों के दौरान सब्र रखना और एक-दूसरे को माफ़ करना ज़रूरी है। इसके साथ ही, कृतज्ञता व्यक्त करें, नियमित दुआ मांगें, हलाल कमाई करें, और अल्लाह व उसके रसूल ﷺ के लिए गहरा प्रेम पैदा करें।

Common Mistakes / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "Leadership means harshness."
गलतफहमी 1: "नेतृत्व या बड़ा होने का मतलब कठोरता है।"

Correction: Islam teaches leadership with justice, mercy, consultation, and responsibility—not oppression.

सुधार: इस्लाम न्याय, दया, आपसी सलाह और ज़िम्मेदारी के साथ नेतृत्व करना सिखाता है—ज़ुल्म या कड़ाई करना नहीं।

Misconception 2: "Children only need education."
गलतफहमी 2: "बच्चों को केवल स्कूली या शैक्षणिक शिक्षा की आवश्यकता होती है।"

Correction: Children need faith, good manners, love, guidance, and positive role models as much as they need academic education.
सुधार: बच्चों को किताबी पढ़ाई के साथ-साथ ईमान, अच्छे संस्कार, प्यार, सही मार्गदर्शन और अच्छे रोल मॉडल्स की भी उतनी ही ज़रूरत होती है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you are kind to your parents and if you treat your spouse with respect and mercy. Reflect on whether you are giving your children Islamic values by your words and your actions, if you have maintained ties with your relatives, and if your home is truly filled with the remembrance of Allah.
अपने आप से पूछें कि क्या आप अपने माता-पिता के प्रति दयालु हैं और क्या आप अपने जीवनसाथी के साथ सम्मान और करुणा से पेश आते हैं। विचार करें कि क्या आप अपनी बातों और अपने कर्मों से अपने बच्चों को इस्लामी संस्कार दे रहे हैं, क्या आपने अपने रिश्तेदारों के साथ संबंध बनाए रखे हैं, और क्या आपका घर वाकई अल्लाह के ज़िक्र से आबाद है।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

The family is the foundation of Islamic society. A successful Muslim home is built upon faith, love, mercy, justice, and mutual respect. Parents, spouses, children, and relatives all have rights and responsibilities that must be fulfilled sincerely.
परिवार इस्लामी समाज का आधारस्तंभ है। एक सफल मुस्लिम घर की बुनियाद ईमान, प्यार, दया, न्याय और आपसी सम्मान पर रखी जाती है। माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चों और रिश्तेदारों, सभी के अपने अधिकार और ज़िम्मेदारियाँ हैं जिन्हें पूरी निष्ठा से निभाया जाना चाहिए।

When every family member strives to obey Allah and follow the example of Prophet Muhammad ﷺ, the home becomes a place of peace, barakah, and spiritual growth.
जब परिवार का हर सदस्य अल्लाह की आज्ञा मानने और पैगंबर मुहम्मद ﷺ के नक्श-ए-कदम पर चलने का प्रयास करता है, तो घर शांति, बरकत और आध्यात्मिक विकास का केंद्र बन जाता है।

End of Chapter 8 / अध्याय 8 समाप्त

CHAPTER 9
Good Character (Akhlaq)

حسن الأخلاق

अच्छा चरित्र (अख़लाक़) - इस्लाम की ख़ूबसूरती

Introduction / परिचय

Many people think Islam is only about prayer, fasting, charity, and Hajj. While these acts of worship are essential, Islam also places tremendous emphasis on good character (Akhlaq).
बहुत से लोग सोचते हैं कि इस्लाम केवल नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के बारे में है। हालाँकि इबादत के ये कार्य अनिवार्य और आवश्यक हैं, लेकिन इस्लाम अच्छे चरित्र (अख़्लाक़) पर भी बहुत अधिक ज़ोर देता है।

A Muslim is recognized not only by his worship but also by his honesty, his kindness, his humility, his patience, his mercy, his forgiveness, and his respect for others. The Prophet Muhammad ﷺ was sent not only to teach acts of worship but also to perfect human character.
एक मुसलमान न केवल अपनी इबादत से बल्कि अपनी ईमानदारी, दयालुता, विनम्रता, धैर्य, करुणा, क्षमाशीलता और दूसरों के प्रति सम्मान से भी पहचाना जाता है। पैगंबर मुहम्मद ﷺ को न केवल इबादत के तरीके सिखाने के लिए बल्कि मानव चरित्र को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए भेजा गया था।

A person may pray regularly, yet if he lies, cheats, abuses others, or behaves unjustly, his character does not reflect the teachings of Islam.
कोई व्यक्ति नियमित रूप से नमाज़ पढ़ सकता है, फिर भी यदि वह झूठ बोलता है, धोखा देता है, दूसरों को अपशब्द कहता है या अन्यायपूर्ण व्यवहार करता है, तो उसका चरित्र इस्लाम की शिक्षाओं को नहीं दर्शाता।

The Character of Prophet Muhammad ﷺ / पैगंबर मुहम्मद ﷺ का चरित्र

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ
Reference: Qur'an 68:4

Indeed, you are surely upon an exalted standard of character.
निस्संदेह आप महान चरित्र पर हैं।

The life of Prophet Muhammad ﷺ is the finest example of honesty, patience, mercy, justice, humility, and forgiveness.
पैगंबर मुहम्मद ﷺ का जीवन ईमानदारी, धैर्य, करुणा, न्याय, विनम्रता और क्षमाशीलता का सबसे बेहतरीन और उत्तम उदाहरण है।

Why Was the Prophet ﷺ Sent? / पैगंबर ﷺ को क्यों भेजा गया था?

The Prophet ﷺ said: "I was sent only to perfect noble character."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे केवल उत्तम चरित्र को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है।"

Reference: Al-Adab al-Mufrad

This Hadith shows that excellent character is a central objective of Islam.
यह हदीस दर्शाती है कि बेहतरीन और उच्च चरित्र का होना इस्लाम का एक मुख्य और केंद्रीय उद्देश्य है।

The Best Believers / सबसे बेहतरीन मोमिन

The Prophet ﷺ said: "The most complete of the believers in faith are those with the best character."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "ईमान के लिहाज़ से मोमिनों में सबसे पूर्ण वह लोग हैं जिनका चरित्र सबसे अच्छा है।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

Strong faith is reflected through beautiful manners.
मजबूत और सच्चा ईमान हमेशा सुंदर व्यवहार और अच्छे अख़्लाक़ के माध्यम से ही झलकता है।

Honesty (Sidq) / ईमानदारी (सिद्क़)

Honesty is one of the greatest qualities of a believer.
ईमानदारी एक मोमिन के सबसे महान और बुनियादी गुणों में से एक है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ
Reference: Qur'an 9:119

O you who believe! Fear Allah and be with those who are truthful.
ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो।

A Muslim should always be truthful in speech, business, promises, and testimony.
एक मुसलमान को बातचीत, व्यापार, वादों और गवाही में हमेशा सच्चाई का रास्ता अपनाना चाहिए।

Mercy (Rahmah) / दया व करुणा (रहमक)

The Prophet ﷺ said: "The merciful are shown mercy by the Most Merciful. Show mercy to those on the earth, and the One above the heavens will show mercy to you."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "रहम करने वालों पर परम दयालु (अल्लाह) रहम करता है। तुम धरती वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

Mercy should extend to parents, children, neighbours, the poor, animals, and even those who disagree with us.
दया और करुणा का यह दायरा माता-पिता, बच्चों, पड़ोसियों, गरीबों, जानवरों और यहाँ तक कि उन लोगों तक भी विस्तृत होना चाहिए जो हमसे असहमति रखते हैं।

Controlling Anger / गुस्से पर काबू पाना

A man asked the Prophet ﷺ for advice. He replied: "Do not become angry." The man repeated his request several times, and the Prophet ﷺ repeated: "Do not become angry."
एक व्यक्ति ने पैगंबर ﷺ से सलाह मांगी। उन्होंने उत्तर दिया: "गुस्सा मत करो।" उस व्यक्ति ने कई बार अपनी बात दोहराई, और पैगंबर ﷺ ने हर बार यही दोहराया: "गुस्सा मत करो।"

Reference: Sahih al-Bukhari

Islam encourages controlling anger rather than allowing it to control us.
इस्लाम गुस्से के नियंत्रण में आने के बजाय, हमें अपने गुस्से पर काबू पाने और उसे नियंत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

Humility / विनम्रता

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا
Reference: Qur'an 17:37

Do not walk upon the earth arrogantly.
धरती पर घमंड के साथ मत चलो।

A believer remains humble regardless of wealth, knowledge, or status.
एक सच्चा मोमिन धन, ज्ञान या ऊंचे पद व मर्तबे के बावजूद हमेशा विनम्र और ज़मीन से जुड़ा रहता है।

Keeping Promises / वादों को पूरा करना

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

مَسْئُولًا ۖ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
Reference: Qur'an 17:34

Fulfil every covenant. Surely, every covenant will be questioned about.
अपने वादों को पूरा करो, क्योंकि हर वादे के बारे में पूछताछ होगी।

Breaking promises without a valid reason damages trust and is condemned in Islam.
बिना किसी ठोस और जायज़ कारण के वादों को तोड़ना आपसी भरोसे को ठेस पहुँचाता है और इस्लाम में इसकी कड़े शब्दों में निंदा की गई है।

Avoiding Backbiting (Ghibah) / पीठ पीछे बुराई करने से बचना (ग़ीबत)

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا
Reference: Qur'an 49:12

Do not backbite one another.
एक-दूसरे की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) मत करो।

Backbiting harms hearts, families, friendships, and communities.
पीठ पीछे किसी की बुराई (ग़ीबत) करना दिलों को ठेस पहुँचाता है, परिवारों, दोस्तों और पूरे समाज को नुकसान पहुँचाता है।

Smiling Is Charity / मुस्कुराना सदक़ा है

The Prophet ﷺ said: "Your smile for your brother is charity."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अपने भाई को देखकर तुम्हारा मुस्कुराना भी एक सदक़ा (दान) है।" [1]

Reference: Jami' at-Tirmidhi

A simple smile, sincere greeting, or kind word can become an act of worship.
एक छोटी सी मुस्कान, सच्चे दिल से किया गया सलाम या कोई भी दयालु शब्द इबादत का रूप ले सकता है।

Forgiveness / क्षमाशीलता

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا
Reference: Qur'an 24:22

Let them pardon and overlook."
उन्हें माफ़ कर देना चाहिए और दरगुज़र करना चाहिए।

Forgiveness does not always remove pain, but it frees the heart from hatred and earns Allah's pleasure.

माफ़ कर देने से हमेशा पुराना दर्द तो नहीं मिटता, लेकिन यह दिल को नफ़रत और कड़वाहट से आज़ाद कर देता है और अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) का कारण बनता है।

Practical Habits of Good Character / अच्छे चरित्र के व्यावहारिक गुण

To practice excellent manners, you should always speak the truth, keep your promises, and respect your parents. It is essential to honour your guests, help your neighbours, control your anger, and forgive others when wronged. Additionally, you should remain patient, avoid gossip and backbiting, smile sincerely, speak gently, and maintain fairness in all your dealings.
बेहतरीन अख़्लाक़ अपनाने के लिए, आपको हमेशा सच बोलना चाहिए, अपने वादों को पूरा करना चाहिए और अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। मेहमानों का आदर-सत्कार करना, पड़ोसियों की मदद करना, अपने गुस्से को काबू में रखना और दूसरों को माफ़ करना बेहद ज़रूरी है। इसके साथ ही, सब्र से काम लें, चुगली और ग़ीबत से दूर रहें, सच्चे दिल से मुस्कुराएं, नरमी से बात करें और अपने हर लेन-देन व व्यवहार में निष्पक्षता बनाए रखें।

Common Mistakes / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "Religion is only worship."
Complex 1: "धर्म या दीन का मतलब केवल नमाज़-रोज़ा जैसी इबादत करना है।"

Correction: Islam teaches that good character is an essential part of worship.
सुधार: इस्लाम सिखाता है कि अच्छा चरित्र और व्यवहार भी इबादत का एक अनिवार्य व महत्वपूर्ण हिस्सा है।

Misconception 2: "Good manners are optional."
गलतफहमी 2: "अच्छे अख़्लाक़ या संस्कार रखना वैकल्पिक (मर्ज़ी पर) है।"

Correction: The Qur'an and Sunnah show that noble character is among the greatest acts that bring a person closer to Allah.
सुधार: क़ुरआन और सुन्नत स्पष्ट करते हैं कि उत्तम चरित्र उन सबसे महान कार्यों में से एक है जो किसी इंसान को अल्लाह के सबसे करीब लाते हैं।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you are honest in every situation and if people can genuinely trust you. Reflect on how you react when you become angry, whether you easily forgive those who wrong you, and if people around you would describe you as a kind and merciful person.
अपने आप से पूछें कि क्या आप हर हाल में ईमानदार रहते हैं और क्या लोग आप पर वाकई भरोसा कर सकते हैं। इस बात पर विचार करें कि जब आपको गुस्सा आता है तो आप कैसा व्यवहार करते हैं, क्या आप उन लोगों को आसानी से माफ़ कर देते हैं जो आपके साथ गलत करते

हैं, और क्या आपके आस-पास के लोग आपको एक दयालु और रहमदिल इंसान के रूप में देखते हैं।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Good character is one of the greatest signs of sincere faith. The Prophet Muhammad ﷺ demonstrated the highest standard of honesty, mercy, humility, patience, and forgiveness.
अच्छा चरित्र सच्चे और शुद्ध ईमान की सबसे बड़ी निशानियों में से एक है। पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने पूरी इंसानियत के सामने ईमानदारी, करुणा, विनम्रता, धैर्य और क्षमाशीलता का सबसे सर्वोच्च मानक (स्तर) स्थापित करके दिखाया।

When a Muslim beautifies his behavior according to the Sunnah, his interactions become a means of spreading peace and drawing closer to Allah.
जब एक मुसलमान सुन्नत के मुताबिक अपने अख़्लाक़ को खूबसूरत बनाता है, तो उसका दूसरों के साथ उठना-बैठना और व्यवहार समाज में शांति फैलाने और अल्लाह का करीब हासिल करने का ज़रिया बन जाता है।

End of Chapter 9 / अध्याय 9 समाप्त

CHAPTER 10

Tawbah & Seeking Allah's Forgiveness

التوبة والاستغفار

तौबा और अल्लाह से माफ़ी माँगना

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا

Reference: Surah Az-Zumar (39:53)

"O My servants who have transgressed against themselves, do not despair of the mercy of Allah. Indeed, Allah forgives all sins. Indeed, He is the Most Forgiving, the Most Merciful." — Qur'an 39:53
"ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, अल्लाह की रहमत से निराश मत हो। निस्संदेह अल्लाह सारे गुनाहों को माफ़ कर देता है। यक़ीनन वह बहुत माफ़ करने वाला, अत्यंत दयालु है।" — क़ुरआन 39:53

Chapter Objectives / अध्याय के उद्देश्य

After completing this chapter, you will understand what Tawbah (Repentance) means, the importance of Istighfar (Seeking Forgiveness), and Allah's infinite mercy. You will also learn the conditions of sincere Tawbah, the major obstacles that prevent repentance, and practical steps to remain steadfast after repentance.

इस अध्याय को पूरा करने के बाद, आप समझेंगे कि तौबा (पश्चाताप) का क्या अर्थ है, इस्तग़फ़ार (माफ़ी माँगने) का क्या महत्व है, और अल्लाह की असीम रहमत कितनी बड़ी है। आप सच्ची तौबा की शर्तों, तौबा करने से रोकने वाली मुख्य बाधाओं, और तौबा करने के बाद उस पर डटे रहने के व्यावहारिक कदमों के बारे में भी जानेंगे।

Introduction / परिचय

Every human being commits mistakes. No one is free from sin except the Prophets, whom Allah protected from major sins.
हर इंसान से गलतियाँ होती हैं। नबियों (पैगंबरों) को छोड़कर कोई भी इंसान गुनाहों से पाक नहीं है, जिन्हें अल्लाह ने बड़े गुनाहों से सुरक्षित रखा था।

Islam does not teach that sinners have no hope. Instead, it teaches that the door of repentance remains open until death or until the sun rises from the west, one of the major signs of the Last Day.
इस्लाम यह नहीं सिखाता कि गुनाहगारों के लिए कोई उम्मीद नहीं बची है। इसके बजाय, यह सिखाता है कि तौबा का दरवाज़ा मौत आने तक या पश्चिम से सूरज उगने तक खुला रहता है, जो कि क़यामत (अंतिम दिन) की बड़ी निशानियों में से एक है।

Allah loves those who sincerely repent and return to Him. No matter how great a person's sins may be, Allah's mercy is even greater if he sincerely turns back to Him. This hope is one of the greatest blessings of Islam.
अल्लाह उन लोगों से मोहब्बत करता है जो सच्चे दिल से तौबा करते हैं और उसकी तरफ लौटते हैं। किसी इंसान के गुनाह चाहे कितने भी बड़े क्यों न हों, यदि वह सच्चे मन से अल्लाह की तरफ मुड़ता है, तो अल्लाह की रहमत उससे कहीं अधिक बड़ी है। यह उम्मीद इस्लाम की सबसे बड़ी नेमतों में से एक है।

Repentance is not a sign of weakness. It is a sign of faith.
तौबा करना किसी कमज़ोरी की निशानी नहीं है, बल्कि यह ईमान की निशानी है।

Allah Loves Those Who Repent / अल्लाह तौबा करने वालों से प्रेम करता है

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ
Reference: Qur'an 2:222

Indeed, Allah loves those who constantly repent and those who purify themselves.
निस्संदेह अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो बार-बार तौबा करते हैं और पाकीज़गी अपनाते हैं।

Never Lose Hope / कभी उम्मीद मत खोना

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ
Reference: Qur'an 39:53

Say: O My servants who have wronged themselves, do not despair of the mercy of Allah.
कह दीजिए: ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है! अल्लाह की रहमत से निराश मत हो।

This is one of the most hopeful verses in the Qur'an. No matter how many sins a believer has committed, sincere repentance can erase them by Allah's permission.
यह क़ुरआन की सबसे अधिक उम्मीद जगाने वाली आयतों में से एक है। एक मोमिन ने चाहे कितने भी गुनाह क्यों न किए हों, सच्ची तौबा अल्लाह की इज़ाज़त से उन सभी को मिटा सकती है।

The Best of Sinners / गुनाहगारों में सबसे बेहतर

The Prophet Muhammad ﷺ said: "Every son of Adam commits sins, and the best of those who commit sins are those who repent."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "आदम की हर संतान (इंसान) गुनाह करती है, और गुनाहगारों में सबसे बेहतर वे लोग हैं जो तौबा कर लेते हैं।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

This Hadith teaches that making mistakes is part of human nature. The difference between a believer and an unrepentant sinner is that the believer returns to Allah with sincerity.
यह हदीस सिखाती है कि गलतियाँ करना मानवीय स्वभाव का हिस्सा है। एक मोमिन और तौबा न करने वाले गुनाहगार में यही अंतर है कि मोमिन पूरी ईमानदारी और सच्चे दिल से अल्लाह की तरफ लौट आता है।

Conditions of a Sincere Tawbah / सच्ची तौबा की शर्तें

Scholars mention that sincere repentance includes specific essential steps. First, you must stop the sin immediately, as a person cannot continue committing a sin while claiming to have repented. Second, you must feel genuine remorse, for the Prophet ﷺ said that regret itself is repentance. Third, you must make a firm intention never to return to that sin, meaning that although a person may fall into sin again due to human weakness, his intention at the time of repentance must be sincere. Fourth, you must restore the rights of others, meaning that if someone has stolen wealth, slandered another person, or violated another person's rights, those rights should be returned or forgiveness should be sought where appropriate.
उलेमा (विद्वान) समझाते हैं कि सच्ची तौबा में कुछ ज़रूरी बातें शामिल हैं। सबसे पहले, आपको उस गुनाह को तुरंत रोक देना चाहिए, क्योंकि कोई भी व्यक्ति गुनाह जारी रखते हुए तौबा का दावा

नहीं कर सकता। दूसरा, आपको दिल से सच्चा पछतावा होना चाहिए, क्योंकि पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया है कि पछतावा ही तौबा है। तीसरा, आपको उस गुनाह पर दोबारा कभी न लौटने का पक्का इरादा करना चाहिए, यानी भले ही कोई व्यक्ति मानवीय कमज़ोरी के कारण भविष्य में फिर से बहक जाए, लेकिन तौबा करते समय उसकी नीयत पूरी तरह साफ होनी चाहिए। चौथा, आपको दूसरों के अधिकारों (हक़ूक़-उल-इबाद) को बहाल करना चाहिए, जिसका अर्थ है कि यदि किसी ने धन चुराया है, किसी की पीठ पीछे बुराई की है, या किसी के अधिकारों का उल्लंघन किया है, तो उन अधिकारों को वापस किया जाना चाहिए या जहां उचित हो वहां माफ़ी मांगी जानी चाहिए।

Reference for regret statement: Sunan Ibn Majah
पछतावे वाले कथन का हवाला: सुनन इब्न माजाह

The Power of Istighfar / इस्तग़फ़ार की ताकत

The Prophet ﷺ used to seek Allah's forgiveness frequently despite being free from sin. He said: "By Allah, I seek Allah's forgiveness and repent to Him more than seventy times in a day."
पैगंबर ﷺ गुनाहों से पाक होने के बावजूद बहुत कसरत से अल्लाह से माफ़ी मांगा करते थे। उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम, मैं एक दिन में सत्तर से अधिक बार अल्लाह से माफ़ी (इस्तग़फ़ार) मांगता हूँ और उसकी तरफ तौबा करता हूँ।"

Reference: Sahih al-Bukhari

In another authentic narration, the number is mentioned as more than one hundred times. This teaches us that seeking forgiveness should become a daily habit.
एक अन्य प्रामाणिक रिवायत में यह संख्या सौ से भी अधिक बार बताई गई है। यह हमें सिखाता है कि अल्लाह से माफ़ी माँगना हमारी दैनिक आदत बन जाना चाहिए।

Reference: Sahih Muslim / हवाला: सहीह मुस्लिम

The Best Supplication for Forgiveness / माफ़ी माँगने की सबसे बेहतरीन दुआ

The Prophet ﷺ taught Sayyidul Istighfar, which begins with: "Allahumma Anta Rabbi la ilaha illa Anta, Khalaqtani wa ana 'abduka..." Anyone who recites it sincerely in the morning or evening, believing in its meaning, and dies before the next period, has been promised Paradise by Allah's permission.
पैगंबर ﷺ ने सैय्यदुन इस्तग़फ़ार की दुआ सिखाई, जो इस प्रकार शुरू होती है: "अल्लाहुम्मा अंता रब्बी ला इलाहा इल्ला अंता, ख़लक़्तनी व अना अब्दुका..." जो कोई भी सुबह या शाम को इसके अर्थ पर पूरा यक़ीन रखते हुए सच्चे दिल से इसे पढ़ता है, और अगली सुबह या शाम होने से पहले उसकी मृत्यु हो जाती है, तो अल्लाह की अनुमति से उससे जन्नत का वादा किया गया है।

Reference: Sahih al-Bukhari / हवाला: सहीह अल-बुख़ारी

Obstacles to Repentance / तौबा के रास्ते की रुकावटें

Many people delay Tawbah because they think they are still young, or they plan to repent after Hajj. Others assume Allah will forgive them later, or feel that their sins are too many to be forgiven. These are among the whispers of Shaytan. Death may come unexpectedly, so the best time to repent is today.
बहुत से लोग यह सोचकर तौबा में देरी करते हैं कि वे अभी युवा हैं, या वे हज के बाद तौबा करने की योजना बनाते हैं। अन्य लोग यह मान लेते हैं कि अल्लाह उन्हें बाद में माफ़ कर देगा, या उन्हें लगता है कि उनके गुनाह माफ़ होने के लिहाज़ से बहुत ज़्यादा हैं। ये सब शैतान के वसवसे (बहकावे) हैं। मौत कभी भी अचानक आ सकती है, इसलिए तौबा करने का सबसे बेहतरीन वक़्त आज ही है।

Fruits of Repentance / तौबा के फल (लाभ)

Sincere Tawbah brings peace of heart, forgiveness, nearness to Allah, hope, blessings in life, spiritual purification, and excellent preparation for the Hereafter.
सच्ची तौबा दिल को सुकून, मग़फ़िरत (क्षमा), अल्लाह का क़ुर्ब (निकटता), उम्मीद, जीवन में बरकत, आध्यात्मिक पवित्रता और आख़िरत के लिए बेहतरीन तैयारी प्रदान करती है।

Regarding the passage in Qur'an 71:10–12, it shows that seeking forgiveness is directly connected with Allah's mercy and blessings from the sky and abundance in wealth and children.
क़ुरआन 71:10–12 के अंशों के संबंध में, यह दर्शाता है कि अल्लाह से माफ़ी माँगना सीधे तौर पर उसकी रहमत, आसमान से होने वाली बारिश और धन व संतान की बरकत से जुड़ा हुआ है।

Practical Action Plan / व्यावहारिक कार्य योजना

To cultivate a habit of repentance, you should seek forgiveness every day and recite Astaghfirullah frequently. It is helpful to learn and recite Sayyidul Istighfar, avoid returning to old sins, and keep righteous company. You should also replace bad habits with good deeds, read the Qur'an daily, and pray sincerely for Allah's continuous guidance.
तौबा की आदत डालने के लिए, आपको हर दिन माफ़ी माँगनी चाहिए और कसरत से 'अस्तग़फ़िरुल्लाह' पढ़ना चाहिए। सैय्यदुल इस्तग़फ़ार को याद करना और पढ़ना, पुराने गुनाहों पर लौटने से बचना और नेक लोगों की सोहबत में रहना बेहद मददगार होता है। आपको बुरी आदतों को नेक कामों से बदलना चाहिए, रोज़ाना क़ुरआन पढ़ना चाहिए और अल्लाह के सीधे मार्गदर्शन के लिए सच्चे दिल से दुआ करनी चाहिए।

Common Mistakes / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "My sins are too great."
गलतफहमी 1: "मेरे गुनाह बहुत बड़े हैं।"

Correction: No sin is greater than Allah's mercy for the one who sincerely repents.
सुधार: सच्चे दिल से तौबा करने वाले के लिए कोई भी गुनाह अल्लाह की रहमत और दया से बड़ा नहीं हो सकता।

Misconception 2: "I will repent when I become old."
गलतफहमी 2: "मैं बूढ़ा होने पर तौबा करूँगा।"

Correction: No one knows when death will arrive. The wise believer repents immediately.
सुधार: कोई नहीं जानता कि मौत कब आ जाएगी। बुद्धिमान मोमिन वही है जो बिना देरी किए तुरंत तौबा करता है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you have sincerely repented for your past sins and if you seek Allah's forgiveness every day. Reflect on whether you are delaying repentance without any guarantee of tomorrow, if you have returned the rights of people whom you may have wronged, and what specific sin you need to leave today for the sake of Allah.
अपने आप से पूछें कि क्या आपने अपने पिछले गुनाहों के लिए सच्चे दिल से तौबा की है और क्या आप हर दिन अल्लाह से माफ़ी माँगते हैं। इस पर विचार करें कि क्या आप कल की कोई गारंटी न होने के बावजूद तौबा में देरी कर रहे हैं, क्या आपने उन लोगों के अधिकार लौटाए हैं जिनके साथ आपने कभी गलत किया हो, और वह कौन सा गुनाह है जिसे आपको आज ही अल्लाह की रज़ा के लिए छोड़ देने की ज़रूरत है।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Every human being commits mistakes, but Allah has opened the door of Tawbah for those who sincerely return to Him. Repentance is not merely saying "Astaghfirullah" with the tongue—it is leaving the sin, feeling remorse, resolving not to return, and correcting wrongs where possible.
हर इंसान से गलतियाँ होती हैं, लेकिन अल्लाह ने उन लोगों के लिए तौबा का दरवाज़ा हमेशा खुला रखा है जो सच्चे दिल से उसकी ओर लौटते हैं। तौबा का मतलब केवल ज़ुबान से 'अस्तग़फ़िरुल्लाह' कह देना नहीं है—बल्कि गुनाह को छोड़ना, दिल में पछतावा महसूस करना, दोबारा न लौटने का इरादा करना और जहाँ तक संभव हो गलतियों को सुधारना है।

A believer never loses hope in Allah's mercy, no matter how great his past mistakes. Through sincere Tawbah and constant Istighfar, the heart is purified, faith is strengthened, and a person draws closer to Allah.
एक मोमिन अल्लाह की रहमत से कभी निराश नहीं होता, चाहे उसकी पिछली गलतियाँ कितनी भी बड़ी क्यों न हों। सच्ची तौबा और लगातार इस्तग़फ़ार के माध्यम से दिल पाक हो जाता है, ईमान मजबूत होता है और इंसान अल्लाह के करीब आ जाता है।

End of Chapter 10 / अध्याय 10 समाप्त

CHAPTER 11

Death, Barzakh & The Hereafter

الموت والبرزخ والاستعداد للآخرة

मौत, बरज़ख़ और आख़िरत की तैयारी

OPENING VERSE

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

Reference: Surah Ali 'Imran (3:185)

""Every soul shall taste death, and you will only be given your full reward on the Day of Resurrection.""

""हर प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। तुम्हें तुम्हारा पूरा बदला क़यामत के दिन दिया जाएगा।""

Introduction / परिचय

Death is the only certainty in every human life. Every king, every scholar, every rich person, every poor person, every believer, and every disbeliever will eventually leave this world.
मृत्यु हर मानव जीवन में एकमात्र निश्चित सच्चाई है। हर राजा, हर विद्वान, हर अमीर व्यक्ति, हर गरीब व्यक्ति, हर मोमिन और हर इनकार करने वाला अंततः इस दुनिया को छोड़ जाएगा।

No one knows when death will come. Allah has kept its exact time hidden so that people remain prepared throughout their lives.
कोई नहीं जानता कि मौत कब आएगी। अल्लाह ने इसका सटीक समय छिपा कर रखा है ताकि लोग जीवन भर इसके लिए तैयार रहें।

Islam teaches that death is not the end of existence, but the beginning of a new stage of life. The life of this world (Ad-Dunya) is temporary. The life after death (Al-Akhirah) is eternal.
इस्लाम सिखाता है कि मृत्यु अस्तित्व का अंत नहीं है, बल्कि जीवन के एक नए चरण की शुरुआत है। इस दुनिया का जीवन (अद-दुनिया) अस्थायी है। मृत्यु के बाद का जीवन (अल-आख़िरत) हमेशा रहने वाला है।

Everything a person says, earns, spends, believes, and does in this world will be presented before Allah on the Day of Judgment.
इस दुनिया में इंसान जो कुछ भी बोलता है, कमाता है, खर्च करता है, विश्वास रखता है और करता है, वह सब क़यामत के दिन अल्लाह के सामने पेश किया जाएगा।

Every Soul Shall Taste Death / हर प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

ا إِلَّا ﴿الْقِيَامَةِ ۖ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْ ﴿كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْ
مَتَاعُ الْغُرُورِ
Reference: Qur'an 3:185

Every soul shall taste death. You will receive your full reward only on the Day of Resurrection. Whoever is kept away from the Fire and admitted into Paradise has truly succeeded. The life of this world is nothing but a temporary enjoyment of delusion.
हर प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। तुम्हें तुम्हारा पूरा बदला क़यामत के दिन दिया जाएगा। जिसे जहन्नम से बचाकर जन्नत में दाखिल कर दिया गया, वही वास्तव में सफल हुआ। दुनिया की ज़िंदगी केवल धोखे का अस्थायी लाभ है।

This verse reminds every believer that worldly success is temporary, while the success of the Hereafter is everlasting.
यह आयत हर मोमिन को याद दिलाती है कि दुनिया की सफलता अस्थायी है, जबकि आख़िरत की सफलता हमेशा रहने वाली है।

The Angel of Death / मौत का फ़रिश्ता

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

قُلْ يَتَوَفَّاكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ
Reference: Qur'an 32:11

Say: The Angel of Death, who has been entrusted with you, will take your souls; then to your Lord you will be returned.
कह दीजिए: तुम्हारी जान उस फ़रिश्ते द्वारा ली जाएगी जिसे इस काम पर नियुक्त किया गया है। फिर तुम अपने पालनहार की ओर लौटाए जाओगे।

Death does not occur by chance. It takes place only at the time appointed by Allah.
मृत्यु संयोग से नहीं होती। यह केवल अल्लाह द्वारा तय किए गए समय पर ही होती है।

Remember Death Frequently / मौत को कसरत से याद करो

The Prophet Muhammad ﷺ said: "Remember frequently the destroyer of pleasures: death."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "लज्ज़तों (सुखों) को ख़त्म कर देने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो।"

Reference: Jami' at-Tirmidhi

Remembering death softens the heart, reduces attachment to worldly pleasures, and motivates sincere repentance.

मौत को याद रखने से दिल नरम होता है, सांसारिक सुखों के प्रति लगाव कम होता है और सच्चे दिल से तौबा करने की प्रेरणा मिलती减轻 है।

What is Barzakh? / बरज़ख़ क्या है?

The Arabic word Barzakh (البرزخ) means a barrier or an intermediate stage. It refers to the period between death and the Day of Resurrection.
अरबी शब्द बरज़ख़ (البرزخ) का अर्थ एक आड़, पर्दा या बीच की अवस्था है। यह मृत्यु और पुनरुत्थान (क़यामत) के दिन के बीच की अवधि को दर्शाता है।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

وَمِن وَرَائِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ
Reference: Qur'an 23:100

Behind them is a barrier (Barzakh) until the Day they are resurrected.
उनके पीछे पुनर्जीवित किए जाने के दिन तक एक पर्दा (बरज़ख़) है।

The exact nature of Barzakh belongs to the unseen (Al-Ghayb). Muslims affirm only what Allah and His Messenger ﷺ have authentically informed us about.
बरज़ख़ की वास्तविक स्थिति ग़ैब (परोक्ष) की चीज़ों में से है। मुसलमान केवल उसी बात की पुष्टि करते हैं जिसकी प्रामाणिक जानकारी अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने हमें दी है।

The Questioning in the Grave / क़ब्र के सवालात

According to authentic Hadith, after burial the deceased is questioned by two angels regarding specific foundation principles. The angels will ask who is your Lord, what is your religion, and who is your Prophet.
प्रामाणिक हदीसों के अनुसार, दफ़नाने के बाद मृत व्यक्ति से दो फ़रिश्तों द्वारा कुछ बुनियादी सिद्धांतों के बारे में पूछताछ की जाती है। फ़रिश्ते पूछेंगे कि तुम्हारा रब कौन है, तुम्हारा धर्म क्या है, और तुम्हारा नबी कौन है।

The believing servant is granted firmness by Allah, while the one who rejected the truth faces difficulty.
ईमान वाले बंदे को अल्लाह की ओर से दृढ़ता प्रदान की जाती है, जबकि सत्य को ठुकराने वाले को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

Reference: Sahih al-Bukhari and Sahih Muslim
हवाला: सहीह अल-बुख़ारी और सहीह मुस्लिम

The Resurrection / दोबारा जीवित किया जाना

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ
Reference: Qur'an 23:15–16

Then indeed, after that you are to die. Then indeed you, on the Day of Resurrection, will be resurrected.
फिर इसके बाद तुम्हें निश्चित रूप से मरना है। फिर प्रलय के दिन तुम्हें दोबारा जीवित किया जाएगा।

Every human being will be raised again and gathered before Allah. No one will escape His justice.
हर इंसान को दोबारा उठाया जाएगा और अल्लाह के सामने इकट्ठा किया जाएगा। उसकी अदालत और न्याय से कोई बच नहीं पाएगा।

The Day of Judgment / क़यामत का दिन

The Day of Judgment (Yawm al-Qiyamah) is the day when every person will stand before Allah to account for every belief, word, and deed.
क़यामत का दिन (यौम अल-क़ियामा) वह दिन है जब हर व्यक्ति अपने हर अक़ीदे, शब्द और कर्म का हिसाब देने के लिए अल्लाह के सामने खड़ा होगा।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ
Reference: Qur'an 99:7–8

Whoever does an atom's weight of good will see it, and whoever does an atom's weight of evil will see it.
जिसने एक ज़र्रा (कण) बराबर भी नेकी की होगी, वह उसे देख लेगा, और जिसने एक ज़र्रा बराबर भी बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा।

Nothing is forgotten. Nothing is lost. Allah's justice is perfect.
कुछ भी भुलाया नहीं जाता। कुछ भी खोता नहीं है। अल्लाह का न्याय पूर्ण और अचूक है।

Jannah – The Eternal Home of the Believers / जन्नत – मोमिनों का स्थायी घर

Allah has prepared unimaginable blessings for the people of faith. The Prophet ﷺ narrated that Allah says: "I have prepared for My righteous servants what no eye has seen, no ear has heard, and no human heart has imagined."
अल्लाह ने ईमान वालों के लिए ऐसी नेमतें तैयार कर रखी हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पैगंबर ﷺ ने रिवायत किया कि अल्लाह फ़रमाता है: "मैंने अपने नेक बंदों के लिए वह कुछ तैयार किया है जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, और न ही किसी इंसान के दिल में उसका ख़याल आया।"

Reference: Sahih al-Bukhari and Sahih Muslim

Jannah is free from pain, fear, sickness, old age, and death. Its greatest blessing is the pleasure of Allah.
जन्नत दर्द, डर, बीमारी, बुढ़ापे और मौत से पूरी तरह मुक्त है। इसकी सबसे बड़ी नेमत अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) हासिल होना है।

Jahannam – A Warning / जहन्नम – एक चेतावनी

Allah warns mankind against disbelief, oppression, arrogance, and persistent sin without repentance. Jahannam is real. Its mention in the Qur'an is a reminder to return to Allah before death. A believer fears Allah's punishment but never loses hope in His mercy.
अल्लाह इंसानियत को कुफ़्र (अस्वीकार), ज़ुल्म, घमंड और बिना तौबा के लगातार गुनाह करने के प्रति चेतावनी देता है। जहन्नम पूरी तरह सच है। क़ुरआन में इसका ज़िक्र मौत से पहले अल्लाह की तरफ लौटने की एक याददिहानी है। एक मोमिन अल्लाह के अज़ाब से डरता है लेकिन उसकी रहमत से कभी उम्मीद नहीं खोता।

Preparing for the Hereafter / आख़िरत की तैयारी

To effectively prepare for the final meeting, a wise Muslim strives to fulfill critical duties. This includes performing the five daily prayers, reading the Qur'an, and seeking forgiveness regularly. It is also necessary to earn a Halal income, give charity, honour your parents, and maintain family ties. Furthermore, you should speak truthfully, avoid oppression, increase the remembrance of Allah, and repent sincerely.
आख़िरत की मुलाक़ात की बेहतरीन तैयारी के लिए, एक बुद्धिमान मुसलमान को रोज़ाना कई अहम काम करने चाहिए। इसमें पाँचों वक्त की नमाज़ पाबंदी से पढ़ना, क़ुरआन की तिलावत करना और नियमित रूप से इस्तग़फ़ार करना शामिल है। इसके साथ ही हलाल रोज़ी कमाना, सदक़ा देना, माता-पिता का सम्मान करना और रिश्तेदारों से संबंध बनाए रखना ज़रूरी है। इसके अतिरिक्त, हमेशा सच बोलें, ज़ुल्म से बचें, अल्लाह का ज़िक्र बढ़ाएं और सच्चे दिल से तौबा करें।

Common Misconceptions / आम गलतफहमियां

Misconception 1: "I am still young. I will repent later."
गलतफहमी 1: "मैं अभी छोटा हूँ। मैं बाद में तौबा कर लूँगा।"

Correction: Death comes without notice. The best day to repent is today.
सुधार: मौत बिना किसी पूर्व सूचना या नोटिस के आती है। तौबा करने का सबसे बेहतरीन दिन आज ही है।

Misconception 2: "Good intentions alone are enough."
गलतफहमी 2: "केवल अच्छी नीयत ही काफी है।"

Correction: Islam teaches that sincere faith must be accompanied by righteous deeds.
सुधार: इस्लाम सिखाता है कि सच्चे ईमान के साथ-साथ नेक आमाल (अच्छे कर्मों) का होना भी अनिवार्य है।

Reflection / चिंतन

Ask yourself if you would be ready to meet Allah if you died today, and check if you have fulfilled the rights of Allah and the rights of people. Reflect on whether you are preparing more for the Hereafter than for this temporary world, and think about what specific good deed you can begin today that will continue to benefit you even after your death.
अपने आप से पूछें कि यदि आपकी मृत्यु आज हो जाए, तो क्या आप अल्लाह से मिलने के लिए तैयार हैं, और यह भी जाँचें कि क्या आपने अल्लाह के अधिकारों और बंदों के अधिकारों (हक़ूक़-उल-इबाद) को पूरा किया है। विचार करें कि क्या आप इस अस्थायी दुनिया की तुलना में आख़िरत की तैयारी पर अधिक ध्यान दे रहे हैं, और सोचें कि आप आज कौन सा ऐसा नेक काम शुरू कर सकते हैं जिसका सवाब आपको मरने के बाद भी मिलता रहे।

Chapter Summary / अध्याय का सारांश

Death is not the end of existence but the beginning of the journey to the Hereafter. Every soul will experience death, enter the stage of Barzakh, and eventually stand before Allah on the Day of Judgment.
मृत्यु जीवन का अंत नहीं बल्कि आख़िरत के सफ़र की शुरुआत है। हर जीव को मौत का मज़ा चखना है, बरज़ख़ के चरण में प्रवेश करना है, और अंततः क़यामत के दिन अल्लाह के सामने खड़े होना है।

A believer prepares for this meeting through sincere faith, righteous deeds, repentance, and constant remembrance of Allah. True success is not measured by worldly achievements, but by attaining Allah's pleasure and entering Jannat-ul-Firdaws.
एक मोमिन सच्चे ईमान, नेक आमाल, तौबा और अल्लाह के निरंतर ज़िक्र के माध्यम से इस मुलाक़ात की तैयारी करता है। असली सफलता दुनिया की उपलब्धियों से नहीं, बल्कि अल्लाह की रज़ा हासिल करने और जन्नत-उल-फ़िरदौस में प्रवेश करने से मापी जाती है।

End of Chapter 11 / अध्याय 11 समाप्त

CHAPTER 12

Living a Purposeful Muslim Life

كيف يعيش المسلم حياةً هادفة

एक उद्देश्यपूर्ण मुस्लिम जीवन कैसे जिएँ

OPENING VERSE

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً

Reference: Surah An-Nahl (16:97)

""Whoever does righteous deeds, whether male or female, while being a believer — We will surely grant them a good life...""

""जो कोई भी नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो हम उसे एक पाक और पाकीज़ा ज़िंदगी अता करेंगे।""

Introduction / परिचय

"Whoever does righteous deeds, whether male or female, while being a believer – We will surely grant them a good life, and We will surely reward them according to the best of what they used to do." — Qur'an 16:97
"जो कोई भी नेक काम करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, बशर्ते वह मोमिन (आस्थावान) हो – हम उसे निश्चित रूप से एक अच्छा जीवन प्रदान करेंगे, और हम उन्हें उनके सर्वोत्तम कार्यों के अनुसार उनका पूरा बदला देंगे।" — क़ुरआन 16:97

After completing this chapter, you will understand how to live as a practicing Muslim every day, the balance between Deen and Dunya, and the daily habits that strengthen faith. You will also learn the importance of sincerity, consistency, and good character, and discover a practical roadmap for success in this world and the Hereafter.
इस अध्याय को पूरा करने के बाद, आप समझेंगे कि हर दिन एक व्यावहारिक मुसलमान के रूप में कैसे जिया जाए, दीन (धर्म) और दुनिया के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए, और कौन सी दैनिक आदतें ईमान को मजबूत करती हैं। आप इख़्लास (सच्चाई), निरंतरता और अच्छे चरित्र के महत्व को भी जानेंगे, और इस दुनिया व आख़िरत में सफलता का एक व्यावहारिक खाका समझेंगे।

Islam is not only a religion practiced inside the mosque. It is a complete way of life. A Muslim worships Allah not only through Salah and fasting but also through honesty in business, kindness towards parents, compassion for neighbours, sincerity at work, and service to humanity. Every moment of life can become an act of worship when it is performed with the right intention.
इस्लाम केवल मस्जिद के भीतर अभ्यास किया जाने वाला धर्म नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक संपूर्ण तरीका है। एक मुसलमान न केवल नमाज़ और रोज़े के माध्यम से अल्लाह की इबादत करता है, बल्कि व्यापार में ईमानदारी, माता-पिता के प्रति दयालुता, पड़ोसियों के प्रति सहानुभूति, काम में निष्ठा और मानवता की सेवा के माध्यम से भी उसकी इबादत करता है। जीवन का हर पल इबादत का कार्य बन सकता है जब इसे सही नीयत (इरादे) के साथ किया जाए।

The purpose of this final chapter is to bring together everything discussed throughout this book and provide a practical guide for living according to the

Qur'an and the authentic Sunnah.
इस अंतिम अध्याय का उद्देश्य इस पूरी पुस्तक में चर्चा की गई सभी बातों को एक साथ लाना और पवित्र क़ुरआन व प्रामाणिक सुन्नत के अनुसार जीवन जीने के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करना है।

Begin Every Day with Allah / हर दिन की शुरुआत अल्लाह के साथ करें

The Prophet ﷺ taught Muslims to begin every day by remembering Allah.
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने मुसलमानों को हर दिन की शुरुआत अल्लाह के ज़िक्र (याद) के साथ करने की शिक्षा दी है।

Arabic: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ
Reference: Sahih al-Bukhari

English: "All praise belongs to Allah who gave us life after causing us to die (sleep), and to Him is the resurrection."
Hindi: "तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें मारने (सुलाने) के बाद दोबारा जीवित किया, और उसी की तरफ लौटकर जाना है।"

Starting the day with gratitude reminds us that every new morning is a gift from Allah.
कृतज्ञता (शुक्र) के साथ दिन की शुरुआत करना हमें याद दिलाता है कि हर नई सुबह अल्लाह की ओर से दिया गया एक उपहार है।

Build Your Day Around Salah / नमाज़ के इर्द-गिर्द अपना दिन संवारें

Do not fit Salah into your schedule. Instead, build your schedule around Salah.
नमाज़ को अपने काम के समय के अनुसार मत ढालें, बल्कि अपने काम के समय को नमाज़ के वक़्त के अनुसार व्यवस्थित करें।

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا
Reference: Qur'an 4:103

Indeed, prayer has been prescribed for the believers at fixed times.
निस्संदेह नमाज़ मोमिनों पर समय की पाबंदी के साथ फ़र्ज़ की गई है।

A Muslim's timetable should revolve around the five daily prayers.
एक मुसलमान की समय-सारिणी (टाइमटेबल) पाँच वक्त की दैनिक नमाज़ों के इर्द-गिर्द ही घूमनी चाहिए।

Read the Qur'an Every Day / रोज़ाना क़ुरआन पढ़ें

The Qur'an is guidance, mercy, healing, and light. Even reading one page every day creates a lifelong relationship with Allah's Book. A wise believer makes it a habit to read it, understand it, act upon its teachings, and teach it to others.
क़ुरआन मार्गदर्शन, रहमत, शिफ़ा (उपचार) और नूर (प्रकाश) है। यहाँ तक कि हर दिन सिर्फ एक पन्ना पढ़ना भी अल्लाह की किताब के साथ जीवन भर का रिश्ता कायम कर देता है। एक बुद्धिमान मोमिन इसे पढ़ने, समझने, इसकी शिक्षाओं पर अमल करने और दूसरों को सिखाने को अपनी आदत बना लेता है।

Remember Allah Frequently / अल्लाह को कसरत से याद करें

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:

أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ
Reference: Qur'an 13:28

Indeed, in the remembrance of Allah do hearts find peace.
सुनो! अल्लाह के ज़िक्र (याद) से ही दिलों को सुकून मिलता है।

True peace cannot be purchased. It comes only through the sincere remembrance of Allah.
सच्चा सुकून खरीदा नहीं जा सकता। यह केवल सच्चे दिल से अल्लाह को याद करने से ही हासिल होता है।

Continue Seeking Knowledge / ज्ञान प्राप्त करना जारी रखें

The Prophet ﷺ said: "Whoever travels a path seeking knowledge, Allah will make easy for him a path to Paradise."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई ज्ञान (दीन का इल्म) हासिल करने के रास्ते पर चलता है, अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है।"

Reference: Sahih Muslim

A Muslim never stops learning. To protect your faith, you should read the Qur'an, study Hadith, learn the Seerah, and ask qualified scholars whenever you are unsure about religious matters. Knowledge is a shield that protects faith.
एक मुसलमान कभी सीखना बंद नहीं करता। अपने ईमान की रक्षा के लिए, आपको क़ुरआन पढ़ना चाहिए, हदीस का अध्ययन करना चाहिए, सीरत (पैगंबर की जीवनी) सीखनी चाहिए और जब भी धार्मिक मामलों में कोई संदेह हो, तो योग्य विद्वानों से पूछना चाहिए। ज्ञान वह ढाल है जो ईमान की रक्षा करता है।

Earn Halal, Spend Halal / हलाल कमाएं, हलाल खर्च करें

A practicing Muslim must continue earning honestly while strictly avoiding cheating, bribery, interest (Riba), and every form of injustice. Remember that a small amount of Halal income with Barakah is far better than great wealth without Barakah.
एक व्यावहारिक मुसलमान को हमेशा ईमानदारी से कमाना चाहिए और धोखाधड़ी, रिश्वतखोरी, ब्याज़ (रिबा) और हर तरह के अन्याय से पूरी तरह बचना चाहिए। याद रखें कि बरकत के साथ थोड़ी सी हलाल कमाई भी बिना बरकत की अपार दौलत से कहीं बेहतर है।

Serve Humanity / मानवता की सेवा करें

The Prophet ﷺ said: "The most beloved people to Allah are those who are most beneficial to people."
पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह के नज़दीक सबसे प्रिय लोग वे हैं जो लोगों के लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद (मददगार) हैं।"

Reference: Al-Mu'jam al-Awsat

Helping others is among the greatest forms of worship. This noble service includes feeding the hungry, visiting the sick, helping neighbours, teaching beneficial knowledge, caring for orphans, and actively protecting the environment.
दूसरों की मदद करना इबादत के सबसे बेहतरीन रूपों में से एक है। इस महान सेवा में भूखों को खाना खिलाना, बीमारों की इयादत (हालचाल पूछना) करना, पड़ोसियों की मदद करना, फ़ायदेमंद ज्ञान सिखाना, अनाथों की देखभाल करना और पर्यावरण की रक्षा करना शामिल है।

Remember Death Often / मौत को अक्सर याद करें

Do not fear remembering death. Rather, let it motivate you to do good. Every day you should ask yourself if you have prayed sincerely, if you have wronged anyone, and if you have asked Allah for forgiveness. Reflect on whether you are truly ready to meet your Creator if today were your last day.
मौत को याद करने से डरें नहीं, बल्कि इसे नेक काम करने के लिए अपनी प्रेरणा बनाएं। हर दिन खुद से पूछें कि क्या आपने सच्चे दिल से नमाज़ पढ़ी है, क्या आपने किसी के साथ अन्याय किया है, और क्या आपने अल्लाह से माफ़ी मांगी है। इस बात पर विचार करें कि यदि आज आपका आखिरी दिन हो, तो क्या आप वाकई अपने ख़ालिक़ (बनाने वाले) से मिलने के लिए तैयार हैं।

Daily Habits of a Successful Muslim / एक सफल मुसलमान की दैनिक आदतें

To establish a successful routine, a believer strives to fulfill spiritual and moral habits daily. You should pray all five daily prayers, read the Qur'an daily, and make morning and evening Adhkar. It is also important to speak truthfully, earn a Halal income, give charity regularly, respect parents, honour family ties, and help neighbours. Finally, make it a habit to seek forgiveness daily, sleep after

remembering Allah, and wake up with a heart full of gratitude.
एक सफल जीवनचर्या स्थापित करने के लिए, एक मोमिन रोज़ाना आध्यात्मिक और नैतिक आदतों को पूरा करने का प्रयास करता है। आपको पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़नी चाहिए, रोज़ाना क़ुरआन की तिलावत करनी चाहिए और सुबह-शाम के अज़कार (प्रार्थनाएँ) करने चाहिए। इसके साथ ही सच बोलना, हलाल कमाना, नियमित दान देना, माता-पिता का सम्मान करना, पारिवारिक रिश्ते निभाना और पड़ोसियों की मदद करना भी ज़रूरी है। अंत में, रोज़ाना माफ़ी माँगने, अल्लाह को याद करके सोने और कृतज्ञता से भरे दिल के साथ सुबह जागने की आदत डालें।

The Greatest Success / सबसे बड़ी सफलता

Allah says:
अल्लाह फ़रमाता है:
فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ
Reference: Qur'an 3:185

Whoever is kept away from the Fire and admitted into Paradise has truly succeeded.
जिसे जहन्नम से बचाकर जन्नत में दाखिल कर दिया गया, वही वास्तव में सफल हुआ।

The greatest achievement is not becoming rich or famous. The greatest success is earning Allah's pleasure and reward in the Hereafter.
सबसे बड़ी उपलब्धि अमीर या प्रसिद्ध होना नहीं है। असली सफलता तो आख़िरत में अल्लाह की प्रसन्नता (रज़ा) और उसका इनाम हासिल करना है।

Final Reflection / अंतिम चिंतन

Ask yourself if you are becoming a better Muslim every day, and if your family truly sees Islam through your behavior. Reflect on whether you are preparing for your meeting with Allah, what you would regret if today were your last day, and what specific good deed you will begin today that may continue to benefit you even after your death.
अपने आप से पूछें कि क्या आप हर दिन एक बेहतर मुसलमान बन रहे हैं, और क्या आपका परिवार आपके व्यवहार के माध्यम से इस्लाम की खूबसूरती को देख पा रहा है। इस पर विचार करें कि क्या आप अल्लाह से अपनी मुलाक़ात की तैयारी कर रहे हैं, यदि आज आपका आखिरी दिन हो तो आपको किस बात का पछतावा होगा, और आज आप कौन सा ऐसा नेक काम शुरू करेंगे जिसका सवाब आपको मरने के बाद भी मिलता रहे।

Final Advice / अंतिम सलाह

Dear Reader, this world is temporary, while the Hereafter is eternal. Every prayer, every act of kindness, every honest earning, every sincere tear of repentance, and every moment spent remembering Allah is carefully recorded.
प्रिय पाठक, यह दुनिया अस्थायी है, जबकि आख़िरत हमेशा रहने वाली है। हर नमाज़, दयालुता का

हर कार्य, हर ईमानदार कमाई, तौबा का हर सच्चा आँसू, और अल्लाह की याद में बिताया गया हर एक पल पूरी तरह से रिकॉर्ड किया जा रहा है।

Never think that your good deeds are too small, and never think that your sins are too great for Allah's mercy if you sincerely repent. Hold firmly to the Qur'an, follow the authentic Sunnah of Prophet Muhammad ﷺ, love Allah, love His Messenger ﷺ, serve His creation, and prepare for the Day when you will return to Him.
कभी यह न सोचें कि आपके नेक काम बहुत छोटे हैं, और यदि आप सच्चे दिल से तौबा करते हैं, तो कभी यह न सोचें कि आपके गुनाह अल्लाह की रहमत से बड़े हैं। क़ुरआन को मजबूती से थामे रखें, पैगंबर मुहम्मद ﷺ की प्रामाणिक सुन्नत का अनुसरण करें, अल्लाह से प्यार करें, उसके रसूल ﷺ से मोहब्बत करें, उसकी मख्लूक (रचनाओं) की सेवा करें और उस दिन की तैयारी करें जब आपको उसी की ओर लौटकर जाना है।

Final Supplication / अंतिम दुआ

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ
Reference: Qur'an 2:201

Our Lord, grant us good in this world and good in the Hereafter, and protect us from the punishment of the Fire."
ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भी भलाई दे, आख़िरत में भी भलाई दे और हमें जहन्नम की आग से बचा।

Āmīn. / आमीन।

Conclusion / निष्कर्ष

All praise belongs to Allah, Lord of the worlds. Peace and blessings be upon Prophet Muhammad ﷺ, his family, his Companions, and all those who follow his guidance until the Day of Judgment.
सारे जहानों के पालनहार अल्लाह के लिए ही समस्त प्रशंसाएँ हैं। पैगंबर मुहम्मद ﷺ, उनके परिवार, उनके साथियों (सहाबा) और कयामत के दिन तक उनके मार्गदर्शन का अनुसरण करने वाले सभी लोगों पर शांति और आशीर्वाद (दरूद व सलाम) हो।

If this book has helped you come even one step closer to Allah, then all praise belongs to Him alone. If there is any mistake in this book, it is from the author, and I ask Allah to forgive me.
यदि इस पुस्तक ने आपको अल्लाह के एक कदम भी करीब आने में मदद की है, तो इसका पूरा श्रेय केवल उसी को जाता है। यदि इस पुस्तक में कोई त्रुटि या गलती है, तो वह लेखक की ओर से है, और मैं अल्लाह से इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

May Allah accept this humble effort, make it a means of guidance for every reader, and accept it as Ṣadaqah Jāriyah and Īṣāl-e-Thawāb for my beloved mother, Late Mrs. Shamim Fatima. May Allah forgive her, shower His mercy upon

her, illuminate and expand her grave, and grant her the highest place in Jannat-ul-Firdaws.
अल्लाह इस विनम्र प्रयास को स्वीकार करे, इसे हर पाठक के लिए मार्गदर्शन का साधन बनाए, और इसे मेरी प्यारी माँ, स्वर्गीय श्रीमती शमीम फ़ातिमा के लिए सदक़ा-ए-जारिया और ईसाल-ए-सवाब के रूप में स्वीकार करे। अल्लाह उन्हें माफ़ करे, उन पर अपनी रहमत बरसाए, उनकी क़ब्र को नूर से रोशन व कुशादा (विस्तृत) करे, और उन्हें जन्नत-उल-फ़िरदौस में सर्वोच्च स्थान प्रदान करे।

Āmīn. / आमीन।

Author: Mohd Abdul Rafique Khan / लेखक: मोहम्मद अब्दुल रफ़ीक ख़ान

Special Thanks: Mr. Ahmed Ginani, Talib-e-Ilm, Arshad Meridian, Juhapura, Ahmedabad. May Allah reward him abundantly for his encouragement, guidance, and sincere support in the preparation of this book.
विशेष आभार: श्री अहमद गिनानी, तालिब-ए-इल्म, अरशद मेरिडियन, जुहापुरा, अहमदाबाद। अल्लाह इस पुस्तक को तैयार करने में उनके प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और सच्चे सहयोग के लिए उन्हें भरपूर प्रतिफल (अज्र) दे।

Jazākallāhu Khayran. / जज़ाकल्लाहु ख़ैरन।

"And say: My Lord, increase me in knowledge." — Qur'an 20:114

"और कहो: ऐ मेरे रब! मेरे ज्ञान (इल्म) में वृद्धि कर।" — क़ुरआन 20:114

الحمد لله رب العالمين

All praise is due to Allah, Lord of all the worlds.

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का पालनहार है।

APPENDIX

Key Du'as to Remember

Before Sleeping

بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا

"In Your name, O Allah, I die and I live."

Upon Waking Up

ُالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُور

"All praise belongs to Allah who gave us life after causing us to die, and to Him is the resurrection."

Sayyidul Istighfar (The Master Du'a of Forgiveness)

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ...

The Prophet ﷺ said whoever recites this sincerely in the day or night and passes away will enter Paradise (Sahih al-Bukhari).

Glossary of Key Terms

Ad-Dunya: The temporary, present worldly life.

Tawheed: The absolute oneness and uniqueness of Allah.

Iman: Firm faith and trust in the heart, spoken by the tongue, and proven through actions.

Barakah: Divine blessing or spiritual abundance in wealth, time, or life.

Tawakkul: Complete reliance upon Allah after taking the lawful means.

Tawbah: Sincere repentance and returning to Allah.

Barzakh: The intermediate realm in the grave between death and the Day of Resurrection.

Sadaqah Jariyah: Ongoing charity — good deeds whose reward continues even after death.

Isal-e-Sawab: Dedicating the reward of a deed to a deceased loved one.

Rizq: Every provision — material and spiritual — granted by Allah.

CONCLUSION & FINAL REFLECTION

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّار

"Our Lord, grant us good in this world and good in the Hereafter, and protect us from the punishment of the Fire." — Surah Al-Baqarah (2:201)

"ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भी भलाई दे, आख़िरत में भी भलाई दे और हमें जहन्नम की आग से बचा।" – सूरह अल-बक़रह (2:201)

All praise belongs to Allah (□□□□□□ □□□□□□), Lord of all the worlds. This book was written with one sincere intention: to present the foundational tenets of Islam in a balanced, beautiful format for everyday practice.

May Allah accept this humble effort, forgive any human shortcomings within its pages, and accept it as a continuous source of Sadaqah Jariyah and Isal-e-Sawab for my beloved mother, Late Mrs. Shamim Fatima. May He expand her grave with light and grant her the highest stations in Jannat-ul-Firdaws. Ameen!

AUTHOR

Mohd Abdul Rafique Khan

Special Acknowledgement: Mr. Ahmed Ginani

"And say: My Lord, increase me in knowledge." — Qur'an 20:114

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِين